संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ फरवरी २०१६
वर्ष : २५ अंक : ८
(निरंतर अंक : २७८)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)

महाशिवरात्रि ७ मार्च

शिवजी ने हलाहल विष पिया है । उसे पेट में नहीं उतारा, उसका वमन नहीं किया बल्कि कंठ में ही रखा । इसी प्रकार आपके जीवन में कभी निंदा, विघ्न-बाधा रूपी जहर के घूँट आयें तो आप उन्हें पीकर दुःखी मत होइये और उन्हें बाहर निकाल के जहर मत फैलाइये । उन्हें आप कंठ में धारण करो तो आप भी नीलकंठ की नाईं सदा आत्मानंद में मस्त रह सकते हो । – पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

संत-समाज के विरुद्ध हो रहे षड्यंत्रों एवं दुष्प्रचार से देशवासियों को सावधान करते धनभागी सज्जन । इन लोगों के माता-पिता भी धन्य हैं !

उत्तरायण पर्व पर अहमदाबाद आश्रम में सुसम्पन्न हुआ
सत्संग-सेवा-साधना अनुष्ठान शिविर

'ऋषि प्रसाद' वार्षिक सम्मेलन, बाल संस्कार राष्ट्रीय बैठक, महिला उत्थान मंडल द्वारा 'चलें स्व की ओर...' कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए

देशभर में शुरू हो चुके हैं मातृ-पितृ पूजन के कार्यक्रम व यात्राएँ

परतवाड़ा (महा.)

चांदूर बाजार, जि. अमरावती (महा.)

भँवरपुर (छ.ग.)

हैदराबाद

सिलवासा (दादरा एवं नगर हवेली)

कैथल (हरि.)

बीरगाँव जि. रायपुर (छ.ग.)

जोधपुर

मालखेड़, जि. अमरावती (महा.)

महासमुंद (छ.ग.)

चंडीगढ़ में 'ऋषि प्रसाद सम्मेलन'

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २५ अंक : ८ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २७८)
प्रकाशन दिनांक : १ फरवरी २०१६
पृष्ठ संख्या : ३२+४ (आवरण पृष्ठ सहित)
माघ-फाल्गुन वि.सं. २०७२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
Email : ashramindia@ashram.org
Website : www.ashram.org
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५
आजीवन	₹ ५००	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

इस अंक में...

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

रोज सुबह ६-३० बजे

न्यूज़ WORLD

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

इंटरनेट चैनल
www.ashram.org/live पर उपलब्ध

* 'सुदर्शन न्यूज' चैनल बिग टीवी (चैनल नं. ४२८), डिश टीवी (चैनल नं. ५८१), टाटा स्काई (चैनल नं. ४७७), विडियोकॉन D2H (चैनल नं. ३२२), एयरटेल (चैनल नं. २६६), 'हाथवे' (चैनल नं. २१०) तथा गुजरात एवं महाराष्ट्र में जीटीपीएल (चैनल नं. २४९) पर उपलब्ध है।
* 'न्यूज वर्ल्ड' चैनल रिलायंस के बिग टीवी (चैनल नं. ४२५), मध्य प्रदेश में 'हाथवे' (चैनल नं. २२६), छत्तीसगढ़ में 'ग्रांड' (चैनल नं. ४३) एवं उत्तर प्रदेश में 'नेटविजन' (चैनल नं. २४०) पर उपलब्ध है।

बापूजी ने जीने का सही ढंग सिखाया जीवन का उद्देश्य समझाया

(गतांक से आगे)

स्नान के द्वारा आध्यात्मिक व लौकिक लाभ लेना सिखाया

साबुन, शैम्पू आदि से नहाने से फायदे की जगह नुकसान होता है। पूज्य बापूजी ने अपने सत्संगों में प्राकृतिक स्नान के शारीरिक व मानसिक लाभों के साथ ही आर्थिक व आध्यात्मिक लाभों पर भी प्रकाश डाला है। स्नान की ये सरल युक्तियाँ अपनाकर व्यक्ति स्नान के सारे फायदे ले सकता है और अपना जीवन सुखमय बना सकता है।

पापनाशक, बुद्धिवर्धक स्नान

पूज्यश्री कहते हैं : ''जो आप कर सकते हो, जिससे आपको फायदा होगा, मैं वही बताता हूँ। मैं आपको घरेलू उबटन बनाने की युक्ति बताता हूँ। उससे नहाओगे तो साबुन से नहाने से सौ गुना ज्यादा फायदा होगा और सस्ता भी पड़ेगा। गेहूँ, चावल, जौ, तिल, चना, मूँग और उड़द - इन ७ चीजों को समभाग लेकर पीस लो। यह सप्तधान्य उबटन बन गया। फिर कटोरी में इसका रबड़ी जैसा घोल बना लो। उसे सबसे पहले थोड़ा सिर पर लगाओ, ललाट पर त्रिपुंड लगाओ, बाजुओं पर, नाभि पर लगाओ। बाद में सारे शरीर पर मलकर ४-५ मिनट रुक के सूखने के बाद रगड़ के उतारो, फिर स्नान करो। यह पापनाशक और बुद्धिवर्धक स्नान होगा, साथ ही सात्त्विकता, प्रसन्नता, निरोगता भी बढ़ायेगा। इससे आपको उसी दिन फायदा होगा। आप अनुभव करेंगे कि 'आहा ! कितना आनंद, कितनी प्रसन्नता !' इतना फायदा होता है !

तीर्थोदक स्नान

जौ और तिल मिक्सी में पीसकर रख दो। मग या कटोरी में थोड़ा-सा यह मिश्रण ले के थोड़े पानी में भिगो दो। फिर उसे शरीर पर रगड़ के बाद में स्नान करो। आपको पापनाशक तीर्थोदक स्नान का फल मिलेगा।

जो कभी-कभार इसमें गोमूत्र, गौ-गोबर मिलाकर स्नान करते हैं, उनकी पापराशि खत्म हो जाती है, चित्त प्रसन्न होता है और बुद्धि शुद्ध बनने लगती है। अगर गोमूत्र से सिर के बालों को भिगोकर रखें और थोड़ी देर बाद धोयें तो बाल रेशम जैसे मुलायम होते हैं।

सर्वदोषशामक स्नान

थोड़े बिल्वपत्र पानी में डालकर उनको रगड़ के नहाने से शरीर में से वायु-प्रकोप के दोष दूर होते हैं और यह पुण्यप्रद माना गया है। अथवा तो आँवला चूर्ण और कुटे हुए तिलों का पानी में घोल बनायें। वह रगड़ के स्नान करने से शरीर के सारे दोष, पाप-ताप और रोग निवृत्त होते हैं। तिल वायुदोष का हरण करते हैं और आँवला पित्तदोष का हरण करता है। ये दो दोष चले गये तो एक दोष की कोई दाल नहीं गलती। दो दोष जब मिलते हैं - वायु व पित्त साथ मिलते हैं या वायु व कफ जोर पकड़ते हैं, तब हानिकारक बनते हैं। दो नहीं रहते, फिर एक और एक ग्यारह बन जाते हैं। अब तिल नहीं मिले तो आँवला चूर्ण और तिलों के तेल का उपयोग कर लें।

बाल काले व मजबूत बनाने की युक्तियाँ बतायीं

नींबू रस और आँवला रस मिलाकर सिर पर लगा दो अथवा तो केवल आँवले का रस लगा दो। १५-२० मिनट बाद नहाओ तो आँवले का रस सिर की गर्मी खींच लेगा। बाल जल्दी सफेद नहीं होंगे और बालों की जड़ें कमजोर नहीं होंगी, बाल बने रहेंगे। यदि आँवले का रस नहीं मिले तो आँवले के चूर्ण को रात को पानी में भिगो दो और सुबह उसीका उपयोग कर लो।

घर में बरकत लाने हेतु

जो लोग कभी-कभी गोदुग्ध से बने दही को शरीर पर रगड़कर स्नान करते हैं, उनके घर में लक्ष्मी स्थिर होती है। रुपये-पैसे में बरकत आती है, अच्छी रोजी-रोटी का रास्ता निकलता है।

इनमें से जिसको जो उपलब्ध हो सके, उसका लाभ ले। किसी (तीव्र बुखार आदि) कारणवश नहीं नहा सकते तो फिर मानसिक स्नान कर सकें तो कर लें, मंत्र स्नान करना चाहें तो कर लें, नहीं तो भस्म का स्नान भी किया जा सकता है। (देखें गतांक में यही लेख।)

स्नान कब करें, कब न करें ?

अपनी भारतीय संस्कृति का जो विज्ञान है, वह बहुत काम करता है। रात्रि को स्नान नहीं करना चाहिए। संध्या को, सूर्यास्त के बाद स्नान नहीं करना चाहिए। फिर यह भी खोजा कि मासिक धर्म हो गया हो तो रात्रि को स्नान जरूर कर लेना चाहिए क्योंकि शरीर में मासिक धर्म और ताप का वातावरण है तो स्नान करने से मासिक धर्म नियंत्रित रहेगा। यह भी खोजा है कि चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण है तो ग्रहण की समाप्ति पर रात्रि को स्नान कर लेना चाहिए। ऋषियों, आचार्यों ने कितनी सूक्ष्म खोज की है !

स्नान के बाद क्या करें ?

नहाने के बाद निचोड़े हुए वस्त्र से शरीर को रगड़-रगड़कर पोंछें, जिससे रोमकूपों (त्वचा के छिद्रों) का सारा मैल बाहर निकल जाय और रोमकूप खुल जायें। त्वचा के छिद्र बंद रहने से ही त्वचा की कई बीमारियाँ होती हैं। फिर सूखे कपड़े से शरीर को पोंछकर सूखे, साफ वस्त्र पहन लें।

ज्यादा देर शरीर पर गीले कपड़े होते हैं तो नुकसान होता है क्योंकि शरीर को जो तापमान चाहिए वह नहीं मिल पाता है। गीले कपड़े शरीर का तापमान ठंडा करते हैं तो फिर जठर शरीर को गर्मी भेजता है। इस प्रकार तापमान संतुलित करने के लिए जीवनशक्ति खर्च होती है। इसलिए कभी भी गीले कपड़े ज्यादा देर नहीं पहनने चाहिए और गीला सिर तो कभी नहीं रखना चाहिए। यदि कभी ऐसा हो तो बायाँ नथुना बंद करके दायें नथुने से थोड़ी देर श्वास लेने चाहिए और मुँह में लौंग रख लेनी चाहिए। सर्दी अथवा ठंडी हवा का डर लगे तो १-२ लौंग मुँह में रख लेनी चाहिए। स्नान के दौरान गीले हुए वस्त्रों का जल अपने को व अन्य लोगों को न लगे इसकी सावधानी रखनी चाहिए। जो उन वस्त्रों को झटकते हैं और वह जल दूसरों को लगता है तो उनका पुण्यनाश होता है।

बापूजी ने सिखाया स्वावलम्बन का पाठ

अपने कपड़े स्वयं ही धो डालो। सुविधा में डूबना आराम नहीं है, वह तो आलस्य है। आज बड़े आदमी की पहचान है कि बड़ी गुलामी से घिरा रहेगा। सब काम 'यह नौकर कर ले, वह कर ले...' फिर मशीन ला के कसरत करता है। तो अपने दैनिक जीवन की कसरत का क्यों गला घोंटना ?'' (क्रमशः)

(पृष्ठ १० से 'अपने आत्मस्वरूप... ' का शेष) मैं तुझे पंचामृत से स्नान कराता हूँ। तेरे मंदिर में घंटनाद होता है। अब घंटनाद तो ताँबे-पीतल के घंट से बहुत लोग करते हैं, मैं तो शिवनाद और ॐनाद का ही घंटनाद करता हूँ। हमको भगवान शिव ज्ञान के नेत्रों से निहार रहे हैं। हम पर आज भगवान भोलेनाथ अत्यंत प्रसन्न हैं।'

दृढ़ संकल्प करें कि 'मेरे मन की चंचलता घट रही है, मुझ पर शिव-तत्त्व की, महाशिवरात्रि की और सत्संग की कृपा हो रही है। हे मन ! तेरी चंचलता अब तू छोड़। राजा जनक ने, संत कबीरजी ने जैसे अपने आत्मदेव में विश्रांति पायी थी, श्रीकृष्ण की करुणा और कृपा से जैसे अर्जुन की चंचलता और खिन्नता हट गयी थी और अर्जुन अपने-आपमें शांत हो गया, अपने आत्मा में जग गया, उसी प्रकार मैं अपने आत्मा में शांत हो रहा हूँ, अपने ज्ञानस्वरूप, साक्षी-द्रष्टास्वरूप में जग रहा हूँ।' इससे तुम्हारा मन देह की वृत्ति से हटकर अंतर्मुख हो जायेगा । यह चौरासी लाख योनियों के लाखों-लाखों चक्करों के जंजाल से मुक्ति का फल देनेवाली महाशिवरात्रि हो सकती है।

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः... यदि तू अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करनेवाला है, दुराचारियों में आखिरी नम्बर का है, सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि। तो भी तू गुरु के ज्ञान की नाव में बैठकर निःसंदेह सम्पूर्ण पाप-समुद्र से भलीभाँति तर जायेगा। फिर पानी ५० फुट गहरा हो चाहे ५ हजार फुट गहरा हो, तू बेड़े में बैठा है तुझे चिंता करने की जरूरत नहीं है।

श्रीकृष्ण चाहते हैं कि आपकी समझ की शुद्धि हो, ज्ञान की शुद्धि हो - मरनेवाले शरीर को 'मैं' मत मानो, यह 'मेरा' शरीर है। बदलनेवाला मन है, चिंतन करनेवाला चित्त है, इन सबको देखनेवाला 'मैं' हूँ।

हम हैं अपने आप, हर परिस्थिति के बाप !

हृदय की पुकार, कर देती चमत्कार

लांबड़िया, जि. साबरकांठा (गुजरात) में दीपावली के समय हर साल पूज्य बापूजी के सान्निध्य में विशाल भंडारे का आयोजन होता था। बापूजी अपने करकमलों से गरीबों-आदिवासियों को कपड़े, कम्बल, मिठाई, नकद राशि, जीवनोपयोगी सामग्री आदि बाँटते थे।

२००९ की घटना है। लक्ष्मणपुरा, जि. साबरकांठा (गुज.) से ७० साल के छगन भाई पटेल भंडारे में सेवा के लिए लांबड़िया आये थे। उन्होंने एक आश्रमवासी साधक से पूछा : ''प्रभु ! आप तो आश्रम में रहते हैं, बापूजी से आप कैसे बात करते हैं ? क्या हम नजदीक से दर्शन कर पायेंगे ?''

साधक ने कहा : ''काकाजी ! आपको नजदीक से दर्शन की तड़प है। गुरुकृपा से आपको जल्दी ही नजदीक से दर्शन होंगे।''

पूज्य बापूजी अगले दिन वहाँ पहुँचनेवाले थे परंतु उन काका के प्रबल भक्तिभाव की वजह से उसी दिन शाम को कोटड़ा (राज.) से पूज्यश्री का आगमन हो गया। बापूजी के निवास पर आश्रमवासी साधक पहुँचा तो बापूजी बोले : ''यहाँ तो अपना सत्संग-भवन भी है, जहाँ जपयज्ञ (आश्रम संचालित 'भजन करो, भोजन करो, पैसा पाओ' योजना) चलता है। वहाँ जाना है।''

साधक : ''जी, लेकिन वहाँ का रास्ता खराब है।''

फिर भी बापूजी चलने को तैयार हुए, कहा : ''ठीक है, तुम्हारी मोटरसाइकिल आगे-आगे चलाओ।''

बापूजी उसकी मोटरसाइकिल पर बैठ गये। विश्वप्रसिद्ध ब्रह्मज्ञानी महापुरुष बापूजी की ऐसी गजब की सहजता देख के वह साधक तो चकरा गया ! फिर बापूजी कार से सेवाकेन्द्र पहुँचे।

शाम के ७ बजे थे। छगन काका थाली में रोटी रखकर भोजन शुरू करने ही वाले थे कि बापूजी आ गये। साथ में गाड़ी-चालक और नारायण साँईंजी भी थे।

बापूजी काका से बोले : ''बोलो काका ! कैसे हो ?'' काका तो एकदम स्तब्ध रह गये ! उन्होंने सोचा ही नहीं था कि आज ही उनकी मनोकामना पूर्ण हो जायेगी।

बापूजी दोबारा बोले : ''बोलो ! तुम कुछ बोलते क्यों नहीं ?''

इतने में आश्रमवासी साधक भी आ गया, उसने बताया : ''बापूजी ! इन्होंने आज बहुत प्रेम से रोटी-सब्जी बनायी है और आज ही पूछ रहे थे कि बापूजी के नजदीक से दर्शन कब होंगे ?''

पूज्यश्री बोले : ''देख, तूने बोला और मैं आ गया... मैं तो कल आनेवाला था !''

काका का हृदय भाव से और आँखें आँसुओं से भर गयीं। फिर वे हाथ जोड़े हुए बहुत श्रद्धा-भक्ति से

पूज्यश्री के श्रीचरणों के पास ही बैठ गये।

बापूजी बोले : ''आज मैंने सुबह से कुछ नहीं खाया है। किसकी रोटी-सब्जी बनायी है ?''

काका : ''मक्के, बाजरे और गेहूँ के आटे की रोटियाँ और आलू व कद्दू की सब्जी बनायी है। ५ रोटियाँ बची हैं। बापूजी ! आप थोड़ा रुकिये तो मैं गेहूँ के आटे की रोटियाँ बना देता हूँ।''

बापूजी : ''नहीं-नहीं, मुझे ये ही दे दो।'' बापूजी रसोईघर की ओर आगे-आगे चल दिये और वहाँ जो रोटियाँ रखी थीं, उन्हें निकाला।

बापूजी ने १-१ रोटी नारायण साँईं व गाड़ी-चालक को दी। फिर स्वयं भी १ रोटी और थोड़ी-सी सब्जी लेकर बड़े प्रेम से खाने लगे।

बापूजी नारायण साँईंजी को बोले : ''ऐसी रोटी कभी देखी है ? कभी खायी है ?''

साँईंजी बोले : ''नहीं, ऐसी रोटी न कभी देखी, न कभी खायी।''

फिर बापूजी ने एक रोटी साथ में ले ली और काका को बोले : ''मैं जा रहा हूँ सत्संग में, तुम जल्दी भोजन करके आ जाना।''

काका के तो अष्टसात्त्विक भाव उभरने लगे। हृदय गद्‌गद, शरीर पुलकित और आँखों से तो प्रेम की गंगा-यमुना बह रही थीं।

प्राणिमात्र के प्रति करुणा

थर्मल (गुज.) की घटना है। बापूजी का वहाँ सत्संग-कार्यक्रम था। रात को कुटिया पर बापूजी के सामने सेवक को शास्त्र पढ़ने थे पर वह गलती से उन्हें सत्संग-स्थल पर ही भूल आया था।

एक स्थानीय साधक के साथ वह सेवक बाइक से सत्संग-स्थल पर जा रहा था। अमावस्या के एक दिन पहले की अँधेरी रात थी, सड़क पर स्ट्रीट लाइट भी नहीं थी। अँधेरा छाया हुआ था, एकदम सुनसान सड़क थी, मोटरसाइकिल की हेडलाइट भी खराब हो गयी थी और अचानक आगे आ गयी भैंस ! मोटरसाइकिल पर नियंत्रण नहीं हो पाया और वह भैंस से टकरा गयी।

सेवक की कोहनी में चोट आयी और हाथ में कुछ कंकड़ घुस गये थे तथा गाड़ी चलानेवाले स्थानीय साधक भाई को थोड़ी ज्यादा चोट आयी थी। आसपास के लोग उन दोनों को नजदीक के अस्पताल में ले गये। वहाँ पर उनका इलाज हुआ। सेवक अपना सामान आदि सत्संग-स्थल से ले के बापूजी की सेवा में पहुँच गया।

अगले दिन सुबह जिस स्थानीय भाई को चोट लगी थी, वह अपने पिताजी के साथ बापूजी के दर्शन करने आया। बापूजी ने चोटों के बारे में पूछा तो उसने सारी घटना बता दी। बापूजी ने उपचार की विधि बतायी और प्रसाद दिया। फिर बापूजी अंदर गये और सेवक से बोले : ''तूने तो इलाज करा लिया, उसने भी करा लिया परंतु जिस भैंस से तुम टकराये, उसको भी तो जरूर चोट आयी होगी ?''

''जी।''

''यह तेल की बोतल ले जा और उस भैंस को तेल लगा के आ। और हो सके तो हल्दी चूर्ण में तेल मिलाकर लगाओ अथवा तो पशु-चिकित्सक से सलाह लो।''

एक मूक प्राणी का भी कितना खयाल रखते हैं बापूजी ! सामान्यतः जब गाय-भैंस आदि पशुओं से गाड़ी टकराती है तो लोग अपना तो इलाज करवा लेते हैं परंतु उन मूक पशुओं की तरफ कोई ध्यान नहीं देता है। यह बापूजी की सर्वात्मदृष्टि है जो प्राणिमात्र की पीड़ा के प्रति संवेदना रखती है; प्राणिमात्र के सुख का, मंगल का ध्यान रखती है।

शिव का रूप देता अनुपम संदेश

'शिव' माना कल्याणस्वरूप । भगवान शिव तो हैं ही प्राणिमात्र के परम हितैषी, परम कल्याणकारक लेकिन उनका बाह्य रूप भी मानवमात्र को मार्गदर्शन प्रदान करनेवाला है।

शिवजी का निवास हिमालय का कैलास पर्वत बताया गया है। ज्ञानी की स्थिति ऊँची होती है, हृदय में शांति व विशालता होती है। ज्ञान हमेशा ऊँचे केन्द्रों में रहता है। आपके चित्त में भी यदि कभी काम आ जाय तो आप भी ऊँचे केन्द्रों में आ जाओ ताकि वहाँ काम की दाल न गल सके।

शिवजी की जटाओं से गंगाजी निकलती हैं अर्थात् ज्ञानी के मस्तिष्क में से ज्ञान की गंगा बहती है । उनमें तमाम प्रकार की ऐसी योग्यताएँ होती हैं, जिनसे जटिल-से-जटिल समस्याओं का भी समाधान अत्यंत सरलता से हो जाता है। शिवजी ने दूज का चाँद अपनी जटाओं में लगाया है। दूज का चाँद विकास का सूचक है अथवा तो दूसरे का छोटा-सा गुण भी ज्ञानवान स्वीकार कर लेते हैं, इतने उदार होते हैं - ऐसा संदेश देता है।

शिवजी 'नीलकंठ' कहलाते हैं। जो महान हैं वे विघ्न-बाधाओं को, दूसरों के विघ्नों को अपने कंठ में रख लेते हैं। न पेट में उतारते हैं, न बाहर फैलाते हैं। शिवजी महादेव हैं, भोलों के नाथ हैं। अमृत देवों ने ले लिया है। उच्चैःश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी आदि इन्द्र ने रखा है लेकिन जब हलाहल विष आया है तो शिवजी उसको कंठ में रख लेते हैं। कुटुम्ब में, समाज में भी जो बड़ा है, उसके पास जो सुख-सुविधाएँ हैं, उनका वह खुद के लिए नहीं बल्कि कुटुम्बियों और समाज के लिए, परहित के लिए उपयोग करे। अगर विघ्न-बाधा है, हलाहल पीने का मौका आता है तो आप आगे चले जाइये, आपमें नीलकंठ जैसे गुण आने लगेंगे। यश या मान का मौका आता है तो दूसरे को आगे कर दीजिये लेकिन सेवा का मौका आता है अथवा निंदा आदि आती है तो अपने को आगे रख दीजिये, आपमें अनुपम समता आने लगेगी।

भगवान साम्बसदाशिव आदिगुरु हैं ज्ञान की परम्परा, ब्रह्मविद्या की परम्परा चलाने में । ऐसे भगवान साम्बसदाशिव को प्रसन्न करने के लिए महाशिवरात्रि को शिवमंदिर में आराधना करना ठीक है, अच्छा है लेकिन मौका पाकर एकांत में मानसिक शिव-पूजन करते-करते, उनको प्यार करते-करते इतना जरूर कहना कि 'हे

भोलानाथ ! हमें बाह्य आकर्षण और बाह्य पदार्थ खींचने लगें तो तुरंत तुम्हारी मंगलमयी परम छवि को, परम कृपा को याद करके हम अंतर्मुख होकर अपने शिव-तत्त्व में डूबा करें।'

संकर सहज सरूपु सम्हारा ।
लागि समाधि अखंड अपारा ॥

(श्रीरामचरित. बा.कां. : ५७.४)

पार्वतीजी ने रामजी की परीक्षा लेनी चाही और शिवजी के आगे आकर वर्णन करने में थोड़ा इधर-उधर कहा। शिवजी ने देखा कि 'संसार में और बाहर कुछ-न-कुछ विघ्न और खटपट होते ही रहते हैं।' शिवजी ने तुरंत अपने आत्मस्वरूप की स्मृति की और अखंड, अपार समाधि में स्थित हुए। ऐसे समाधिनिष्ठ महापुरुष भगवान चन्द्रशेखर का इस पर्व पर खूब भावपूर्ण चिंतन, पूजन करते-करते समाहित (एकतान, शांत) होने का सुअवसर पाना।

शिवजी के पास सर्जन और विध्वंस - दोनों का मूल तत्त्व सदा छलकता रहा है। हमारी संस्कृति की यह विशेषता रही है कि विध्वंसक देवता का सर्जन-प्रतीक रख दिया शिवलिंग ! जैसे फूल और काँटे एक ही मूल में से आते हैं, ऐसे ही सर्जनात्मक और विध्वंसक शक्तियाँ एक ही मूल में हैं। जीवन और मृत्यु उसी मूल में हो रहा है, सुख और दुःख उसी मूल का खिलवाड़ है। मान और अपमान उसी साक्षी में हो रहा है, उसी साक्षी की सत्ता में दिख रहा है। रोग और तंदुरुस्ती, जीवन और मृत्यु, बचपन और बुढ़ापा उसी तुम्हारे साक्षी शिव-तत्त्व में ही तो दिख रहा है ! यह सनातन धर्म का रहस्य समझाने की बड़ी उदार प्रक्रिया है, बहुत सूक्ष्म, सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम - सर्वोपरि तत्त्वज्ञान है।

यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ।

'(हे अर्जुन !) जिसको जानकर संसार में फिर और कुछ भी जानने योग्य शेष नहीं रह जाता।'

(गीता : ७.२)

जिसको पाने के बाद और कुछ पाना बाकी नहीं रहता और जिस लाभ से बड़ा कोई लाभ नहीं है, ऐसा यह आत्मलाभ प्राप्त करने के लिए महाशिवरात्रि का मौका बड़ा सहायक होगा।

हो सके तो उस दिन फल और दूध पर रहें। फलादि लेते हैं तो भी सात्त्विक और मर्यादित लें, इससे प्राणशक्ति ऊपर के केन्द्रों में चलेगी। हो सके तो महाशिवरात्रि के दिन मौन-व्रत ले लें।

सबसे बड़ी पूजा : मानस पूजा

देवो भूत्वा देवं यजेत्। शिव होकर शिव की पूजा करो। साधक कहता है कि 'हे भोलेनाथ ! हे चिदानंद !! मैं कौन-सी सामग्री से तेरा पूजन करूँ ? मैं किन चीजों को तेरे चरणों में चढ़ाऊँ ? छोटी-छोटी पूजा की सामग्री तो सब चढ़ाते हैं, मैं मेरे मन और बुद्धि को ही तुझे चढ़ा रहा हूँ ! बिल्वपत्र लोग चढ़ाते हैं लेकिन तीन बिल्वपत्र अर्थात् तीन गुण (सत्त्व, रज और तम) जो शिव पर चढ़ा देते हैं, वे शिव को बहुत प्यारे होते हैं। दूध और दही से अर्घ्य-पाद्य पूजन तो बहुत लोग करते हैं किंतु मैं तो मेरे मन और बुद्धि से ही तेरा अर्घ्य-पाद्य कर लूँ। घी-तेल का दीया तो कई लोग जलाते हैं लेकिन हे भोलेनाथ ! ज्ञान की आँख से देखना, ज्ञान का दीया जलाना वास्तविक दीया जलाना है। हे शिव ! अब आप समझ का दीया जगा दीजिये ताकि हम इस नश्वर देह में समझदारी से रहें। पंचामृत से आपका पूजन होता है। बाहर का पंचामृत तो रुपयों-पैसों से बनता है लेकिन भीतर का पंचामृत तो भावनामात्र से बन जाता है। अपनी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ तेरी सत्ता से संचालित हैं ऐसा समझकर **(शेष पृष्ठ ६ पर)**

एक सरकारी अधिकारी एक दिन सूट-बूट पहनकर, टाई लगा के दफ्तर पहुँचा । थोड़ी ही देर में उसे अपने कानों में साँय-साँय की आवाज सुनाई देने लगी, पसीना आने लगा, घबराहट होने लगी ।

डॉक्टर के पास गया तो उसने कहा : ''आपके दाँतों में समस्या है, ऑपरेशन करना होगा ।''

उसने ऑपरेशन करा लिया । जब अगली बार दफ्तर पहुँचा तो फिर वे ही तकलीफें चालू हो गयीं । फिर डॉक्टर के पास गया तो उसने पुनः दूसरे ऑपरेशन की सलाह दी । इस प्रकार उस व्यक्ति ने कई इलाज व ऑपरेशन करवा डाले परंतु उसे कोई आराम नहीं हुआ । आखिर में विशेषज्ञों की एक समिति बैठी, सबने जाँच करके कहा : ''यह मर्ज लाइलाज है ।''

इतने ऑपरेशनों, इतनी दवाइयों व डॉक्टरों की मीटिंगों से आखिर और अधिक रुग्ण हो गया, पैसों की तबाही हो गयी और आखिर में डॉक्टरों ने हाथ खड़े कर दिये ।

उसने सोचा, 'जब मरना ही है तो जिंदगी की सब ख्वाहिशें क्यों न पूरी कर ली जायें !' सबसे पहले वह शानदार कोट-पैंट बनवाने के लिए दर्जी के पास पहुँचा ।

दर्जी कोट के गले का नाप लेते हुए बोला कि ''आपके कोट का गला १६ इंच होना चाहिए ।'' तो अधिकारी बोला : ''मेरे पुरानेवाले कोट का गला तो १५ इंच है । तुम एक इंच क्यों बढ़ा रहे हो ?''

''साहब ! तंग गले का कोट पहनने से घबराहट, बेचैनी आदि तकलीफें हो सकती हैं । कानों में साँय-साँय की आवाज भी आने लगती है । फिर भी आप कहते हैं तो उतना ही कर देता हूँ ।''

अधिकारी चौंका ! सोचने लगा, 'अब समझ में आया कि तंग गले के कोट के कारण ही मुझे तकलीफें हो रही थीं ।'

उसने तो कोट पहनना ही छोड़ दिया । अब वह भारतीय पद्धति का कुर्ता-पायजामा आदि कपड़े पहनने लगा । उसकी सारी तकलीफें दूर हो गयीं ।

अधिकारी को तो दर्जी के बताने पर सूझबूझ आ गयी परंतु आज अनेक लोग फैशन के ऐसे गुलाम हो गये हैं कि स्वास्थ्य को अनदेखा करके भी फैशनेबल कपड़े पहनना नहीं छोड़ते ।

शोधकर्ताओं के अनुसार चुस्त कपड़े पहनने से दबाव के कारण रक्त-संचरण ठीक से नहीं होता । गहरे श्वास नहीं लिये जा सकते, जिससे खून सामान्य गति से शरीर के सभी भागों में नहीं पहुँचता । इससे शरीर की सफाई ठीक से नहीं हो पाती तथा जिन अंगों तक रक्त ठीक से एवं पर्याप्त मात्रा में नहीं पहुँच पाता है, (शेष पृष्ठ १७ पर)

(दूरदर्शन पर पूर्व में प्रसारितपूज्य बापूजी का पावन संदेश)

प्रश्न : धर्म क्या है ? धर्म और ईश्वर का क्या संबंध है और इन दोनों का मनुष्य से क्या संबंध है ?

पूज्य बापूजी : बढ़िया सवाल है। धर्म क्या है ? इन्द्रियों के बेकाबू होने से मनुष्य नरपशु की नाईं जीवन गुजारता है। धर्म उसे संयत करता है।

शास्ति इति शास्त्रम्। जो हमारे मन, इन्द्रियों को अनुशासित करके पतन से बचा के ऊर्ध्वमुखी करे, उस ज्ञान का वर्णन जिन ग्रंथों में है उनको 'शास्त्र' कहते हैं।

तो धर्म हमारे भोग को नियंत्रित करता है, हमारी बिखरती हुई ऊर्जा को नियंत्रित करके सही रास्ते लगाता है और सही रास्ता यह है कि मुक्ति, शाश्वत आनंद, शाश्वत जीवन की ओर जायें। जो शाश्वत आनंद है, जीवन है वह ईश्वर है और ईश्वर से जोड़नेवाला धर्म है। संयमी बनाकर अंतःकरण को शुद्ध करके चित्त को एकाग्र करके परब्रह्म-परमात्मा को पाये हुए महापुरुषों को समझने की, उनकी कृपा को झेलने की तथा हमारी क्षमताओं का विकास करनेवाली जो व्यवस्था है उसे 'धर्म' कहते हैं।

प्रश्न : यदि सब कुछ तय है, जैसे कहा जाता है कि 'ईश्वर की मर्जी के बगैर पत्ता भी नहीं हिल सकता और सब कुछ भाग्य में लिखा है' तो फिर कर्म करने की आवश्यकता क्यों है ?

पूज्यश्री : ईश्वर की सत्ता के बिना पत्ता भी नहीं हिलता यह बात जितनी सत्य है, उतनी ही यह बात भी सत्य है कि तुम्हारे किये बिना कुछ नहीं हो सकता। जैसे बिजली के भिन्न-भिन्न उपकरण लगे हैं परंतु बिजली की सत्ता के बिना कोई उपकरण या यंत्र चालू होगा ही नहीं तो क्या करें ? क्या बिजली अपने-आप उपकरण चलायेगी ? बिजली तो सत्तामात्र है। ऐसे ही ईश्वर सत्तामात्र है और उस सत्ता का आप सही उपयोग करो या गलत उपयोग करो, यह आप पर निर्भर है। ईश्वर सत्तामात्र है और जल, तेज, वायु, आकाश व पृथ्वी में उसकी सत्ता व्याप्त है। जैसे - सूर्य (तेज तत्त्व) की सत्ता के बिना कोई पेड़-पौधा नहीं उग सकता है। तो क्या हम चुप बैठे रहें ? इससे हमारा बगीचा तो नहीं बन जायेगा। जंगल को काटना है तब भी हमें पुरुषार्थ करना है। बगीचा लगाना है तब भी हमें पुरुषार्थ करना है। सत्ता तो सूर्य की है लेकिन हम

(शेष पृष्ठ १४ पर)

आठ प्रकार के सुखों से भी ऊँचा सुख

आठ प्रकार के सुख होते हैं। देखने, सूँघने, चखने, सुनने और स्पर्श का सुख - ये पाँच विषय-सुख हुए। दूसरा, मान मिलता है तो सुख होता है, अपनी कहीं बड़ाई हो रही है तो सुख होता है। अगर आपको बढ़िया आराम मिलता है तो सुख होता है। तो शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, मान, बड़ाई और आराम - ये आठ प्रकार के सुख होते हैं। इनमें अगर कोई नहीं फँसा तो उसे कौन-सा सुख मिलता है ? भगवत्सुख, भगवद्ज्ञान, भगवद्-बड़ाई, भगवद्-आराम।

भगवत्-सत्संग का सुख, भगवद्भाव का सुख, भगवन्नाम का सुख - ये सुख जीव को तारनेवाले हैं और ८ प्रकार के सुख जीव को मारनेवाले हैं। जैसे भँवरा सुगंध के सुख में कमल में बैठ जाता है, आराम भी मिलता है, सुगंध भी मिलती है। सुबह जंगली जानवर कमल को तोड़कर खा जाते हैं अथवा तो हाथी कुचल देते हैं तो वह मर जाता है। ऐसे ही देखने के सुख में पतंगे सड़कों पर लगी बत्तियों के आसपास मँडराते हैं और यातायात के साधनों से टकरा के या कुचलकर मर जाते हैं। चखने के सुख में मछली कुंडे में फँसती है। सुनने के सुख में हिरण फँस जाता है और फिर शिकारी उसे बाण मारता है। हाथी हथिनी के सुख में गड्ढे में गिरता है। घास-फूस की नकली हथिनी गड्ढे के ऊपर बनाते हैं; हाथी उसको स्पर्श करने, विकार भोगने जाता है तो गड्ढे में गिर जाता है, फिर दर-दर की ठोकरें खाता है, भीख माँगता है। मनुष्य को तो पकड़ के पैर तले दबा दे हाथी लेकिन मनुष्य के अधीन हो जाता है क्योंकि हथिनी के सुख में फँस गया। कितना बड़ा हाथी और कितना छोटा मनुष्य ! किंतु हाथी उसका गुलाम हो गया।

अलि पतंग मृग मीन गज, एक एक रस आँच।
तुलसी तिनकी कौन गति, जिनको ब्यापे पाँच ॥

अलि माना भँवरा, पतंग माना पतंगे, मृग माना हिरण, मीन माना मछली, गज माना हाथी। एक-एक विषय में मूर्ख प्राणी, मूर्ख जंतु अपनी जान गँवा देते हैं तो जो पाँचों इन्द्रियों के पीछे घसीटा जा रहा है, उस मनुष्य की क्या गति होगी ! तो क्या करना चाहिए ? भगवत्सुख, भगवद्ज्ञान, भगवत्प्रेम, भगवद्रस पा के भगवत्प्राप्ति कर लेनी चाहिए।

इन्हें पाने के लिए चलते हैं लेकिन सफल क्यों नहीं होते ? बोले, इन ७ चीजों की खबरदारी नहीं रखते हैं इसलिए सफल नहीं होते :

(१) भगवत्प्राप्ति का उत्साह नहीं है।

(२) श्रद्धा की कमी।

(३) जिनको भगवत्प्रीति, भगवद्-श्रद्धा नहीं है, ऐसे लोगों का संग।

(४) दृढ़ निश्चय नहीं है।

(५) सत्संग का अभाव। सत्संग का महत्त्व नहीं, सत्संग के वचनों को धारण नहीं करते।

(६) आठ सुखों में से किसी-न-किसीका चिंतन, विषय-चिंतन। गंदी वेबसाइटों ने तो युवाधन की तबाही कर दी। इस युग में युवक-युवतियों का सत्यानाश गंदी फिल्मों और वेबसाइटों ने जितना किया है, उतना किसीने नहीं किया।

(७) लापरवाही... 'चलो कोई बात नहीं...' अरे, जो खाना चाहिए वह खाओ, जो नहीं खाना चाहिए नहीं खाओ। जो करना चाहिए वह करो, जो नहीं करना चाहिए वह नहीं करो लेकिन लापरवाही से वह भी कर लेते हैं। जानते हैं कि 'यह ठीक नहीं है', फिर भी थोड़ा... ...। इससे भगवत्प्राप्ति का रास्ता लम्बा हो गया। साधन तो करते हैं, श्रद्धा भी रखते हैं लेकिन दृढ़ श्रद्धा नहीं है। उत्साह है लेकिन पूरा उत्साह नहीं है। इसलिए भी भगवत्प्राप्ति का रास्ता लम्बा हो गया। अच्छा संग तो करते हैं लेकिन साथ-साथ में 'घटिया संग की भी थोड़ी दोस्ती निभा लो...' इसलिए तबाही हो रही है।

तो अपने जीवन में गुरुदीक्षा लेकर नियम से जो १५ मिनट रोज ॐकार का गुंजन करेगा और गुरुमंत्र की १० माला जपेगा, उसको फिसलानेवाली इन ८ प्रकार की विषय-वासनाओं की गंदी आदत छोड़ने में बल मिलेगा और भगवान की शांति, भगवान का मंगल स्वभाव, भगवान का औदार्य सुख मिलेगा और इन ८ प्रकार के सुखों का उपभोग नहीं, औषधवत् उपयोग करने की युक्ति आ जायेगी।

****

(पृष्ठ १२ से ' ईश्वर की सत्ता... ' का शेष) उसका उपयोग करके अपने जीवन को निखारें या बैठे रहें, यह तो हमारे हाथ की बात है।

प्रश्न : तो क्या भाग्य नहीं है ?

पूज्य बापूजी : भाग्य है।

प्रश्न : यदि भाग्य है तो जो भाग्य में है वह मिलना ही है तो फिर हम इस प्रकार कर्म क्यों करें ?

पूज्यश्री : देखिये, आज का पुरुषार्थ कल का भाग्य है। भाग्य भी ३ प्रकार के माने गये हैं – मंद प्रारब्ध, तीव्र प्रारब्ध, तरतीव्र प्रारब्ध। मानो पूर्वकाल में किसीने कोई गलती की है, कोई साधारण पाप किया है या मध्यम पाप किया है कि बड़ा भारी पाप किया है तो उसके अनुसार ही उसका फल भोगने का प्रारब्ध होगा (मंद, तीव्र या तरतीव्र)। अथवा पूर्वकाल में उसने पुण्य किया है – साधारण, मध्यम या उत्तम। तो पूर्वकाल में अगर उसने उत्तम पुण्य किया है तो उसे सुख-सुविधाएँ मिलेंगी। अब सुख-सुविधाएँ तो प्रारब्ध-वेग से मिलीं, थोड़ा-सा प्रयास किया और मिलीं। उसके जितना पुरुषार्थ दूसरे लोग करते हैं तो उनको नहीं मिलतीं लेकिन उसको आसानी से मिलती हैं। अब वह उनमें आसक्त हो जाय या उनका उपयोग अपने लिए, बहुतों के लिए करे इसमें वह स्वतंत्र है। (क्रमशः)

बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु । 'सर्वज्ञ परमेश्वर हमारी द्वेष-भावनाओं को नष्ट करे और हमें निर्भयता प्रदान करे ।' (ऋग्वेद)

जब देवी ने ली दीक्षा

श्री नाभाजी महाराज कृत 'भक्तमाल' में कथा आती है कि श्री हरिव्यासजी संतों के साथ विचरण करते हुए चटथावल नामक ग्राम पहुँचे । वहाँ एक सुंदर वाटिका देख के वे वहीं अपना नित्य-नियम करके भोजन-प्रसाद ग्रहण करने का विचार कर रहे थे । तभी उस वाटिका में देवी के मंदिर पर किसीने बकरा मार के देवी को चढ़ाया । संतों के मन में अति पीड़ा व ग्लानि हुई । सभीने निश्चय किया कि 'इस स्थान पर प्रसाद तो क्या, पानी की एक बूँद भी नहीं पियेंगे ।' सब संतों के साथ श्री हरिव्यासजी भूखे ही रह गये ।

दुष्ट भले संतों की निंदा करके, उन्हें सताकर अपना सर्वनाश करते हैं लेकिन पुण्यात्मा, समाज के सज्जन-समझदार लोग तो उनकी सेवा करके अपना कल्याण कर लेते हैं । यहाँ तक कि भगवान एवं देवी-देवता भी संतों और भक्तों की सेवा करने के लिए सदैव लालायित रहते हैं ।

जैसे कुछ मूढ़ लोगों ने देवी के समक्ष ब्रह्मज्ञानी महापुरुष जड़भरत की बलि देने का प्रयास किया तो देवी ने प्रकट होकर बलि देनेवालों का संहार किया व जड़भरतजी का अभिवादन किया, वैसे ही यहाँ देवी एक नवीन देह धारण करके संतों के पास आ के बोली : ''महात्मन् ! आप लोग भूखे क्यों हो ? भोजन-प्रसाद पाइये ।''

श्री हरिव्यासजी : ''यह हिंसा देख मन में अति ग्लानि हो रही है । अब प्रसाद कौन पाये !''

मानव-तनधारी देवी ने विनय किया : ''वह देवी मैं ही हूँ । अब मुझ पर कृपा कर मुझे अपनी शिष्या बनायें व प्रसाद ग्रहण करें ।''

देवी की विनय व प्रार्थना से द्रवीभूत होकर श्री हरिव्यासजी ने उन्हें अपनी शिष्या बनाना स्वीकार किया । देवी भगवन्मंत्र सुन नगर की ओर दौड़ीं । उस नगर का जो मुखिया था, उसे खाटसमेत भूमि पर पटक के उसकी छाती पर चढ़कर कहने लगीं : ''मैं तो श्री हरिव्यासजी की शिष्या, दासी हूँ । तुम लोग भी अगर उनके शिष्य, दास न होओगे तो अभी सबको मार डालूँगी ।''

देवी की आज्ञा सुन के वे सबके-सब श्री हरिव्यासजी के शिष्य बन गये । मंत्र, जप-माला, तिलक, मुद्रा ग्रहण कर मानो सबको नया जीवन प्राप्त हुआ । श्री हरिव्यासजी के कृपा-प्रसाद से गाँव के सभी लोग हलकी आदतें और बुरे कर्म छोड़कर दुःख, पाप, संताप मिटानेवाले प्रभुरस का पान करने के रास्ते चल पड़े ।

भक्त या संत को सताने का फल
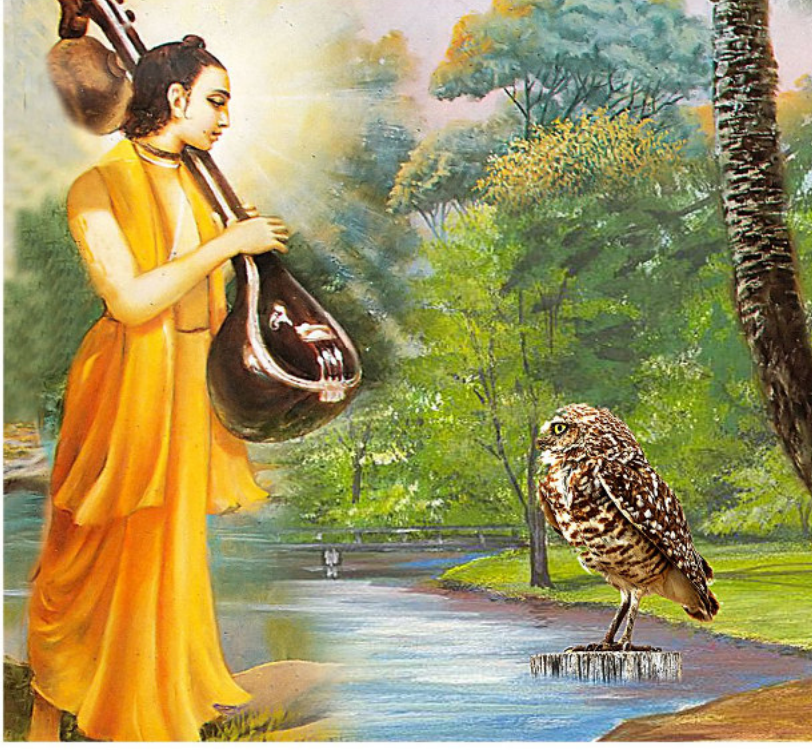
'अद्भुत रामायण' में एक वृत्तांत आता है, जिसे महर्षि वाल्मीकिजी ने समस्त पापों को हरनेवाला और शुभ बताया है।

मानस पर्वत की कोटर में एक उल्लू रहता था, जो देवताओं, विद्याधरों, गंधर्वों और अप्सराओं का गायनाचार्य था। वह किस प्रकार गायनाचार्य के पद पर प्रतिष्ठित हुआ इस बारे में देवर्षि नारदजी द्वारा पूछे जाने पर उसने पूर्व वृत्तांत बताते हुए कहा : ''हे नारदजी ! भुवनेश नामक एक धर्मात्मा राजा था। वह अनेकों अश्वमेध यज्ञ, वाजपेय यज्ञ कर चुका था। उसने करोड़ों गायें, स्वर्ण, वस्त्र, रथ, घोड़े आदि दान किये थे। वह अपनी प्रजा का अच्छी तरह से पालन करता रहा किंतु उसने भगवान के लिए गानयोग (गायन द्वारा गुणगान) पर प्रतिबंध लगा दिया था। वह कहता था कि ''गानयोग से सिर्फ मेरा यशगान करो; जो मेरे सिवाय किसी और का गुणगान करेगा, वह मारा जायेगा।''

उसके राज्य में हरिमित्र नामक एक भक्त रहते थे। वे नदी-किनारे जाकर भगवान का पूजन और वीणा बजाते हुए प्रीतिपूर्वक उनका गुणगान करते थे।

राजा भुवनेश को इस बात का पता चला तो उसने अपने सैनिक भेजे। उन्होंने हरिमित्र की भजन-पूजन की सामग्री नष्ट कर दी और उन्हें बंदी बनाकर राजा के सामने ले आये। सत्ता के मद में चूर हुए एवं चापलूसों की चाटुकारिता से अत्यंत घमंडी बने भुवनेश ने हरिमित्र का सबके सामने खूब अपमान किया, उनका धन छीनकर उन्हें राज्य से निकाल दिया।

समय बलवान है। कुछ समय बाद राजा मर गया। अपने कर्मों के फलस्वरूप वह उल्लू बना। सर्वत्र गति करनेवाला होकर भी वह थोड़ा-सा भी भोजन प्राप्त नहीं कर सका। भूख से अत्यंत आर्त, खिन्न और दुःखित होता हुआ यमराज से कहने लगा : ''हे देव ! मैं भूख से अत्यंत पीड़ित हूँ। मैंने ऐसा कौन-सा पाप किया है और अब मुझे क्या करना चाहिए ?''

यमराज प्रकट होकर बोले : ''तुमने अनेक पाप किये हैं। तुमने हरिमित्र को भक्ति करने से रोका था, उनका धन छीना था। भगवान के गुणगान पर रोक लगाकर प्रजा से स्वयं का यशगान कराया था। इसी कारण तुम्हारे स्वर्गादि लोक नष्ट हो गये। अब तुझे अपने पहले त्यागे हुए शरीर को नोच-नोचकर नित्य खाना होगा। इस प्रकार तुम्हें एक मन्वंतरपर्यंत महानरक में निवास करना है। फिर कुत्ता होना पड़ेगा। उसके बाद दीर्घकाल बीतने पर तुम्हें मनुष्य देह की प्राप्ति होगी।''

हे नारदजी ! जो पूर्वकाल में राजा था, मैं वही हूँ, अब उल्लू की योनि को प्राप्त हुआ हूँ।

हे मुने ! उन भक्तराज को सताने का जो कर्म मैंने किया था, यह उसीका फल मुझे मिला है। तभी से मैं इस पर्वत की कोटर में रह रहा हूँ। मुझे भूख लगने पर खाने हेतु मेरा ही मृत शरीर मेरे सामने उपस्थित हो गया। मैं भूख से व्याकुल होकर जब उसे खाने को तैयार हो गया, तभी दैवयोग से सूर्य के समान प्रकाशमान विमान पर आरूढ़, विष्णुदूतों के साथ हरिमित्र यहाँ आये। उन्होंने मुझे मृतदेह के पास देखा तो दयापूर्वक पूछा : ''हे उलूक ! यह शरीर तो राजा भुवनेश का दिखाई दे रहा है ! तुम इसका भक्षण करने को क्यों उद्यत हो ?''

मैंने उन्हें प्रणाम किया और अपना समस्त वृत्तांत विनयपूर्वक कहा : ''पूर्वकाल में आपके प्रति जो अपराध मुझसे बन गया था, यह उसीका फल है। इसके बाद मुझे कुत्ते की योनि मिलेगी। उसके पश्चात् मनुष्य-जन्म मिलेगा।''

दयालु हरिमित्र करुणा से भरकर बोले : ''हे उलूक ! तुमसे जो अपराध हुआ था, मैं उसे क्षमा करता हूँ। यह शव अब अंतर्धान हो और तुम श्वान (कुत्ता) भी न बनो। मेरे प्रसाद से तुम्हें गानयोग की उपलब्धि होगी और भगवान की स्तुति गाने के लिए तुम्हारी जिह्वा स्पष्टता को प्राप्त होगी। तुम देवताओं, विद्याधरों, गंधर्वों और अप्सराओं के गायनाचार्य होकर विविध भाँति के भक्ष्य-भोज्यों से सम्पन्न हो जाओगे। इसके बाद कुछ ही दिनों में तुम्हारा सब प्रकार से कल्याण होगा।''

हे द्विज ! हरिमित्र के ऐसा कहते ही वह नारकीय दृश्य लुप्त हो गया। महापुरुषों की ऐसी ही करुणामयी प्रवृत्ति होती है। वे अपराध करनेवालों के भी दुःखों को नष्ट कर देते हैं। इस प्रकार हरिमित्र अमृतमय वचन कहकर हरिधाम को गये। हे नारदजी ! इस प्रकार मुझे गायनाचार्य का पद प्राप्त हुआ।''

जरा सोचिये, जब भगवान को प्रीतिपूर्वक भजनेवाले एक भक्त को सताने से ऐसी दुर्गति हुई तो भगवान के परम प्रिय ब्रह्मज्ञानी संतों को सताने से कितना भयंकर दोष लगेगा और कैसी दुर्गति होगी ! सताते समय पता न भी चले तो भी उस कर्म का फल तो भुगतना ही पड़ता है, अनेक नीच योनियों में जाना ही पड़ता है। नीच योनियों की सृष्टि ही ऐसे महापापों के फल भोगने के लिए हुई है, कोई शास्त्रों-पुराणों को पढ़कर देख ले। संत-अपमान के महापाप के फल से कोई नहीं बचा सकता पर सच्चे दिल से उन्हींसे क्षमा-याचना कर ली जाय तो वे क्षमा भी कर देते हैं। संतों के अपमान से मनुष्य तबाही की खाई में गिरता है तो संतों की कृपा से ऊपर भी उठता है। उनकी सेवा तथा आज्ञापालन के द्वारा ऊँचे-में-ऊँचा मनुष्य-जन्म का सुफल परमानंद की प्राप्ति भी कर सकता है।

****

(पृष्ठ ११ से 'फैशन की...' का शेष) वे कमजोर पड़ जाते हैं। तंग जींस से हृदय को रक्त की वापसी और रक्त परिसंचरण में बाधा आती है, जिससे निम्न रक्तचाप होकर चक्कर एवं बेहोशी आ सकती है। नायलॉन के या अन्य सिंथेटिक (कृत्रिम) कपड़े पहनने से त्वचा के रोग होते हैं क्योंकि इनमें पसीना सोखने की क्षमता नहीं होती और रोमकूपों को उचित मात्रा में हवा नहीं मिलती।

भारत की उष्ण एवं समशीतोष्ण जलवायु है लेकिन यहाँ भी ठंडे देशों की नकल करके अनावश्यक कोट, पैंट, टाई तथा तंग कपड़े पहनना गुलामी नहीं तो और क्या है ?

हमें अपनी संस्कृति के अनुरूप सादे, ढीले, सूती, मौसम के अनुकूल, मर्यादा-अनुकूल एवं आरामदायक कपड़े पहनने चाहिए।

फैशन की अंधी दौड़ में स्वास्थ्य व रुपयों की बलि न चढ़ायें। भारतीय संस्कृति के अनुरूप वस्त्रों का उपयोग कर अपने स्वास्थ्य व सम्पदा - दोनों की रक्षा करें।

भगवान को सबसे प्यारा कौन ?

भगवान अपने हृदय की बात भक्तों से कहना चाहते हैं । संत चरनदासजी ने उसका वर्णन किया है :

प्रभु अपने मुख से कही, साधू मेरी देह ।
उनके चरणन की मुझे, प्यारी लागै खेह[1] ।।
सब तज कर मोको भजैं, मोही सेती[2] प्रीति ।
मैं भी उनके कर बिक्यो, यही जु मेरी रीति ।।
साधु हमारी आतमा, सबसे प्यारे मोहि ।
नारद निश्चय कीजिये, साँच कहत हौं तोहि ।।
जिनके कारण मै रच्यौ, अद्‌भुत यह संसार ।
उनही की इच्छा धरूँ, हर युग में अवतार ।।
प्रेमी को ऋणियाँ रहूँ, यही हमारो सूल३ ।
चार मुक्ति दई ब्याज में, दे न सकौं अब मूल ।।
सर्वस दीन्हों भक्त को, देख हमारो नेह[4] ।
निर्गुण सों सर्गुण भयो, धरी पशू की देह ।।

मेरे जन मो में रहैं, मैं भक्तन के माहिं ।
मेरे अरु मम सन्त के, कछु भी अन्तर नाहिं ।।
साध सोवै तहाँ सोय रहुँ, भोजन सँग ही जेवँ[5] ।
जो वह गावै प्रेम सों, मैं हूँ ताली देवँ ।।
मम भक्ता जित जित[6] फिरै, गवनै[7] लागा जावँ ।
जहाँ तहाँ रक्षा करौं, भक्तवछल मेरो नावँ[8] ।।
भक्त हमारो पग धरै, जहाँ धरूँ मैं हाथ ।
लारे[9] लागो ही फिरौं, कबहुँ न छोडूँ साथ ।।
मोको वश कियो जो चहै, भक्तन की करि सेव ।
उनमें ह्वै कर[10] मैं मिलौं, करौं बहुतही हेव[11] ।।
जिनकी महिमा प्रभु करैं, अपने मुख सों भाख[12] ।
तिनकी कौन बराबरी, वेद भरत हैं साख[13] ।।

१. धूलि २. साथ ३. प्रण ४. प्रेम ५. खाऊँ ६. जहाँ-जहाँ ७. साथ-साथ ८. नाम ९. पीछे
१०. होकर ११. स्नेह १२. बखान १३. गवाही

कब तक ?

गुरुजन जो कुछ कह जाते हैं,
तुम उसे भुलाओगे कब तक ।।
देखना यही है इस जग में,
तुम चैन मनाओगे कब तक ।।
अगणित अभिमानी चले गये,
माया ममता से छले गये ।
वे ले न गये कौड़ी संग में,
तुम लोभ बढ़ाओगे कब तक ।।
जो गया न अब वह आयेगा,
जो है वह निश्चय जायेगा ।
जब कोई सदा न रह सकता,
तब तुम रह पाओगे कब तक ।।

जिसको गाकर रोना होता,
जिसको पाकर खोना होता ।
उस नश्वर वैभव सुख के,
तुम यह गीत सुनाओगे कब तक ।।
मिलती है परम शांति जिससे,
मिटती है दुखद भ्रांति जिससे ।
ऐ पथिक उसी परमेश्वर की,
तुम शरण न आओगे कब तक ।।

- संत पथिकजी

सद्गुरु से ही ब्रह्म को ब्रह्मत्व प्राप्त होता है

संत एकनाथजी महाराज सद्गुरु-स्तुति करते हुए लिखते हैं : 'हे सद्गुरु परब्रह्म ! तुम्हारी जय हो ! ब्रह्म को 'ब्रह्म' यह नाम तुम्हारे ही कारण प्राप्त हुआ है। हे देवश्रेष्ठ गुरुराया ! सारे देवता तुम्हारे चरणों में प्रणाम करते हैं।

हे सद्गुरु सुखनिधान ! तुम्हारी जय हो ! सुख को सुखपना भी तुम्हारे ही कारण मिला है। तुमसे ही आनंद को निजानंद प्राप्त होता है और बोध को निजबोध का लाभ होता है। तुम्हारे ही कारण ब्रह्म को ब्रह्मत्व प्राप्त होता है । तुम्हारे जैसे समर्थ एक तुम ही हो । ऐसे श्रीगुरु तुम अनंत हो । तुम कृपालु होकर अपने भक्तों को निजात्मस्वरूप का ज्ञान प्रदान करते हो। अपने निजस्वरूप का बोध कराकर देव-भक्त का भाव नहीं रहने देते हो।

जिस प्रकार गंगा समुद्र में मिलने पर भी उस पर चमकती रहती है, उसी प्रकार भक्त तुम्हारे साथ मिल जाने पर भी तुम्हारे ही कारण तुम्हारा भजन करते हैं। अद्वैत भाव से तुम्हारी भक्ति करने से तुम्हें परम संतोष होता है और प्रसन्न होने पर तुम शिष्य के हाथों में आत्मसम्पत्ति अर्पण करते हो । शिष्य को निजात्मस्वरूप-दान से गुरुत्व देकर उसे महान बनाते हो, यह तुम्हारा अतिशय विलक्षण चमत्कार है !

जो वेद-शास्त्रों की समझ में नहीं आता, जिसके लिए वेद रात-दिन वार्ता कर रहे हैं, वह आत्मज्ञान तुम सत्शिष्य को एक क्षण में करा देते हो। करोड़ों वेद एवं वेदांत का पठन करने पर भी तुम्हारे आत्मोपदेश की शैली किसीको भी नहीं आ सकती। अदृष्ट वस्तु ध्यान में आना सम्भव नहीं है। तुम्हारी कृपा-युक्ति का लाभ होने पर ही दुर्गम सरल होता है।

'श्रीमद्भागवत' अगम्य है, उस पर एकादश स्कंध का अर्थ अत्यंत गहन है लेकिन तुम सद्गुरु समर्थ और कृपालु हो, इसलिए तुमने मुझसे उसका अर्थ प्राकृत भाषा में करवाया। जिस प्रकार माँ दही को मथकर उसका मक्खन निकाल के बालक को देती है, उसी प्रकार मेरे गुरुदेव जनार्दन स्वामी ने यहाँ किया है। वेद-शास्त्रों का मंथन कर व्यासजी ने 'श्रीमद्भागवत' निकाला, उस भागवत का मथितार्थ (मथ के निकाला गया) यह ग्यारहवाँ स्कंध है, ऐसा निश्चित समझना चाहिए। उस एकादश स्कंध का माधुर्य स्वयं मेरी समझ में नहीं आया इसलिए

मेरे सद्गुरु जनार्दन स्वामीजी ने उसका मंथन कर उसका सार तत्त्व मुझे निकालकर दिया। उसे सहज ही मुख में डाला तो उस एकादश की माधुरी मेरी समझ में आयी। उसी माधुर्य की चाह से यह टीका तैयार हो रही है। इसलिए एकादश स्कंध पर की यह टीका अकेले एक एकनाथ से नहीं बल्कि एक से एक मिलकर बाहर आ रही है। एक पीछे और एक आगे - यही एकादश अर्थात् ग्यारह का स्वरूप है।

सद्गुरु जनार्दन स्वामी ने अपना एकपन एक में (अद्वैत में) दृढ़ किया। वही एकादश स्कंध के अर्थ में आया है। एका (एकनाथ) में एकत्व घुल-मिल गया। भोजन में जिस प्रकार मिष्टान्न का ग्रास होता है, उसी प्रकार भागवत में यह एकादश स्कंध है।

गुण-दोषों का दर्शन साधक के लिए घातक

भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश सुनकर उद्धवजी ज्ञानसम्पन्न हो गये। इससे अत्यधिक ज्ञातृत्व हो जाने के कारण ज्ञान-अभिमान होने की सम्भावना हुई। 'सारा संसार मूर्ख है और एक मैं ज्ञाता हूँ' - ऐसा जो अहंकार बढ़ता रहता है, वही गुण-दोषों की सर्वदा एवं सर्वत्र चर्चा कराता है। जहाँ गुण-दोषों का दर्शन होता है, वहाँ सत्य, ज्ञान का लोप हो जाता है।

साधकों के लिए इतना ज्ञान-अभिमान बाधक है। ईश्वर भी यदि गुण-दोष देखने लगें तो उनको भी बाधा आयेगी। इस प्रकार गुण-दोषों का दर्शन साधक के लिए पूरी तरह घातक है। इसलिए प्रश्न किये बिना ही श्रीकृष्ण उद्धव को उसका उपाय बताते हैं। जिस प्रकार बालक को उसका हित समझ में नहीं आता, अतः उसकी माँ ही निष्ठापूर्वक उसका खयाल रखती है, उसी प्रकार उद्धव के सच्चे हित की चिंता श्रीकृष्ण को थी। उद्धव का जन्म यादववंश में हुआ था और यादव तो ब्रह्मशाप से मरनेवाले थे। उनमें से उद्धव को बचाने के लिए श्रीकृष्ण उसे सम्पूर्ण ब्रह्मज्ञान बता रहे हैं। जहाँ देहातीत ब्रह्मज्ञान रहता है, वहाँ शाप का बंधन बाधक नहीं होता। यह जानकर ही श्रीकृष्ण ब्रह्मज्ञान का उपदेश देने लगे।

श्रीकृष्ण कहते हैं : 'हे उद्धव ! संसार में मुख्यरूप से ३ गुण हैं। उन गुणों के कारण लोग भी ३ प्रकार के हो गये हैं। उनके शांत, दारुण और मिश्र - ऐसे स्वाभाविक कर्म हैं। उन कर्मों की निंदा या स्तुति हमें कभी नहीं करनी चाहिए क्योंकि एक के भलेपन का वर्णन करने से उन्हीं शब्दों से दूसरों को बुरा बोलने जैसा हो जाता है।

संसार परिपूर्ण ब्रह्मस्वरूप है इसलिए निंदा या स्तुति किसी भी प्राणी की कभी भी नहीं करनी चाहिए। सभी प्राणियों में आत्माराम है इसलिए प्राण जाने पर भी निंदा या स्तुति नहीं करें। उद्धव ! निंदा-स्तुति की बात सदा के लिए त्याग दो, तभी तुम्हें परमार्थ साध्य होगा और निजबोध से निज स्वार्थ प्राप्त होगा। उद्धव ! समस्त प्राणियों में भगवद्भाव रखना, यही ब्रह्मस्वरूप होने का मार्ग है। इसमें कभी भी धोखा नहीं है। जहाँ से अपाय (खतरे) की सम्भावना हो, यदि वहीं भगवद्भावना दृढ़ता से बढ़ायी जाय तो जो अपाय है, वही उपाय हो जायेगा। इस स्थिति को दूर छोड़ जो 'मैं ज्ञाता हूँ' ऐसा अहंकार करेगा और निंदा-स्तुति का आश्रय लेगा वह अनर्थ में पड़ेगा।' ('श्रीमद् एकनाथी भागवत' से)

(पृष्ठ २३ से 'आशाओं के दास... ' का शेष) २४ घंटे... केवल २४ घंटे यह निर्णय कर लो कि 'मेरी कोई इच्छा नहीं। जो तेरी मर्जी हो वह सब स्वीकार है...' तो आपको जीने का मजा आ जायेगा।

साधारण आदमी और संत में यही फर्क होता है कि संत बाधित इच्छा से कर्म करते हैं, इच्छारहित कर्म करते हैं। अतः उनके कर्म शोभा देते हैं और साधारण आदमी इच्छाओं के गुलाम होकर कर्म करते हैं। आशा करनी ही है तो राम की करो।

आशा तो एक राम की, और आश निराश ।

'ऐसे दिन कब आयेंगे कि मैं अपने राम-स्वभाव में जगूँगा, सुख-दुःख में सम रहूँगा ? मेरे ऐसे दिन कब आयेंगे कि मुझे संसार स्वप्न जैसा लगेगा ? ऐसे दिन कब आयेंगे कि मैं अपनी देह में रहते हुए भी विदेही आत्मा में जगूँगा ?' ऐसा चिंतन करने से निम्न (तुच्छ) इच्छाएँ शांत होती जायेंगी और बाद में उन्नत इच्छाएँ भी शांत हो जायेंगी। फिर तुम इच्छाओं के दास नहीं, आशाओं के दास नहीं, आशाओं के राम हो जाओगे। ॐ... ॐ... ॐ...

बाल्यकाल के संस्कार देते जीवन सँवार

(संत रविदासजी जयंती : २२ फरवरी)

बाल्यकाल में बालक को जैसे संस्कार मिल जाते हैं, बालक आगे चलकर वैसा ही बनता है। बालक रविदास को

उनकी माता करमादेवी ने भगवद्भक्ति के संस्कार दिये। बड़ों का सम्मान करना, महापुरुषों को प्रणाम करना तथा साधु-संतों की सेवा करना परम धर्म है - उनकी माता द्वारा दिये गये ये संस्कार बालक रविदास के हृदय में गहरे उतर गये थे। उनकी माता संत-महापुरुषों के भगवत्प्रीति, भगवदीय प्रेरणा के प्रसंग सुनाती थीं, जिससे यही बालक आगे चलकर संत रविदासजी के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

मैंने सच्चा सौदा किया है

बालक रविदास जब जूते बनाने व बेचने के अपने पिता के व्यवसाय में योगदान देने लगे थे, तब एक दिन उनके पिता रघु ने उन्हें दो जोड़ी जूते बेचने के लिए बाजार भेजा। बालक को बाजार में बैठे-बैठे दोपहर हो गयी मगर जूते नहीं बिके। इस खाली समय में वे भगवद्-भजन में मस्त रहे। तभी उन्हें दो साधु भरी दोपहरी में नंगे पाँव जाते हुए दिखे। यह देख उनके हृदय में पीड़ा हुई। उन्होंने साधुओं को ससम्मान रोककर पूछा : ''महात्मन् ! इतनी गर्मी में आप नंगे पैर क्यों हैं ?''

साधु बोले : ''बेटा ! हम भगवद्-भजन में मस्त रहते हैं। बाकी जैसी प्रभु की इच्छा !''

''महाराज ! मेरे पास तो केवल दो जोड़ी जूते हैं। यदि आप इन्हें स्वीकार कर लें तो मुझे बड़ी खुशी होगी।''

रविदासजी की नम्रता से साधु बड़े खुश हुए। दोनों साधु जूते पहनकर रविदासजी को आशीर्वाद दे के चले गये।

घर आने पर पिताजी ने पूछा : ''दोनों जोड़ी जूते बिक गये ?''

''बिके तो नहीं मगर आज मैंने एक सच्चा सौदा किया है।'' उन्होंने सारी बात बता दी।

''वह तो ठीक है मगर अब इस तरह घर का खर्च कैसे चलेगा ?''

''पिताजी ! प्रभुकृपा से हमारे घर में कोई कमी नहीं आयेगी।''

''बेटा ! साधु-संतों की सेवा करना हमारा धर्म है किंतु गृहस्थी चलाना भी हमारा कर्तव्य है।''

लेकिन रविदासजी तो सेवाभावना में अडिग रहे।

जब पूरा सामान दे डाला

रविदासजी अपना कार्य पूरी मेहनत व लगन से करते थे। जैसे संत कबीरजी कपड़ा इस भाव से बुनते थे कि 'इसे मेरे रामजी पहनेंगे' तो वह कपड़ा लोगों को खूब पसंद आता था, ऐसे ही रविदासजी भी जूते बनाते समय यही भाव रखते थे कि 'इन्हें परमात्मा पहनेंगे'। इससे उनके बनाये जूते सभीको बहुत पसंद आते थे।

एक बार साधुओं का एक समूह रविदासजी के यहाँ आ पहुँचा। उस समय रविदासजी जूते बनाने में मग्न थे। साधुओं को घर आया देख वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उनका बहुत सम्मान किया, फिर प्रणाम करके बोले : ''आज माता-पिता घर में नहीं हैं इसलिए भोजन बनाकर खिलाने में मैं असमर्थ हूँ परंतु कच्चा सामान है, आप इसे ही स्वीकार करें।''

साधुजन भोजन का सीधा-सामान पाकर बहुत प्रसन्न हुए और रविदासजी को आशीर्वाद देकर चले गये। शाम को जब माता-पिता घर लौटे तो रविदासजी ने सारी बात बतायी।

पिता ने कहा : ''बेटा ! यह तो तुमने बहुत पुण्य का कार्य किया है। साधु-संतों की सेवा करना ही हमारा धर्म है।''

जीवन में सद्गुरु की आवश्यकता व महत्ता का वर्णन संत रविदासजी ने अपनी साखियों में किया है :

रामानन्द मोहि गुरु मिल्यो, पाया ब्रह्म बिसास१।
राम नाम अमि२ रस पियो, रैदास हि भयो षलास३॥
गुरु ग्यांन दीपक दिया, बाती दइ जलाय।
रैदास हरि भगति कारनै, जनम मरन विलमाय४॥
रविदास राति न सोईये, दिवस न करिये स्वाद।
अह निस हरि जी सिमरिये, छाड़ि सकल प्रतिवाद॥
भौ सागर दुतर अति, किंधु मूरिष यहु जान।
रैदास गुरु पतवार है, नाम नाव करि जान॥

संत रैदासजी (रविदासजी) गुरुविमुख लोगों के लिए हितभरी सलाह देते हुए कहते हैं कि 'हे मूढ़ ! यह अच्छी तरह जान ले कि यह संसाररूपी सागर पार करना बड़ा कठिन है। केवल सद्गुरुरूपी नाव ही तुझे पार लगा सकती है। अतः उनके नाम (स्मरण) रूपी नाव पर सवार होकर इस संसाररूपी सागर को पार कर ले।'

१. विश्वास २. अमृत ३. पवित्र ४. मुक्त होना

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़िये। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

(१) किसे पानी में डालकर नहाने से पुण्य होता है ?
(२) मनुष्य के जीवन की नींव क्या है ?
(३) किस अत्यंत शक्तिशाली हाथी को गुरुरूपी सिंह से कम कोई भी वश नहीं कर सकता ?
(४) वे कौन हैं जो किसीकी बुराई देखकर उसको ठुकराते नहीं हैं ?
(५) नेत्ररोग के लिए श्रेष्ठ औषधि क्या है ?

आशाओं के दास नहीं, आशाओं के राम हो जाओगे

पूज्य बापूजी

मन में कुछ आया और वह कर लिया तो इससे आदमी अपनी स्थिति से गिर जाता है लेकिन शास्त्र-सम्मत जीवन जीकर, सादगी और संयम से रह के आवश्यकताओं को पूरी करे, मन के संकल्प-विकल्पों को काटता रहे और आत्मा में टिक जाय तो वह आशारहित पद में, आत्मपद में स्थित हो जाता है। फिर तो उससे संसारियों की भी मनोकामनाएँ पूरी होने लगती हैं।

पतिव्रता स्त्री का सामर्थ्य क्यों बढ़ता है ? क्योंकि उसकी अपनी कोई इच्छा नहीं होती। पति की इच्छा में उसने अपनी इच्छा मिला दी। सत्शिष्य का सामर्थ्य क्यों बढ़ता है ? सत्शिष्य को ज्ञान क्यों अपने-आप स्फुरित हो जाता है ? क्योंकि सद्गुरु की इच्छा में वह अपनी इच्छा मिला देता है। शिष्य लाखों-करोड़ों हो सकते हैं पर सत्शिष्यों की संख्या अत्यंत कम होती है। सत्शिष्य वह है जो गुरु की परछाईं बन जाय, अपने को गुरु के अनुसार पूरा ढाल दे। उसको ज्यादा कुछ नहीं करना पड़ता। तोटकाचार्य शंकराचार्यजी के ऐसे सत्शिष्य थे और कबीरजी के ऐसे सत्शिष्य थे सलूका, मलूका।

सती और सत्शिष्य को वह सामर्थ्य प्राप्त होता है जो योगियों को तमाम प्रकार की कठिन योग-साधनाएँ करने के बाद भी मुश्किल से प्राप्त होता है। योग-साधना करने के बाद जो उनकी अवस्था आती है, वह सती और सत्शिष्यों को सहज में ही प्राप्त हो जाती है। सत्शिष्य अपनी इच्छा गुरु की इच्छा में मिला देता है। पतिव्रता स्त्री अपनी इच्छा पति की इच्छा में मिला देती है।

कोई सोचेगा, 'यदि गुरु की इच्छा में अपनी इच्छा मिला दो तो गुरु की भी तो इच्छा हुई और जब तक इच्छा है तो गुरु नहीं...।' हाँ, गुरु के अंदर इच्छा तो है लेकिन वह इच्छा कैसी है ? गुरु की इच्छा शिष्य के हृदय में ब्रह्माकार वृत्ति उत्पन्न करने की है। गुरु इच्छा के दास नहीं, इच्छाओं के स्वामी हैं। उनकी इच्छा व्यवहार काल में दिखती है लेकिन अंतःकरण में उस इच्छा की सत्यता नहीं होती। गुरु की इच्छा कैसी होती है ? गुरु की इच्छा होती है कि शिष्य उन्नत हो। अतः गुरु की इच्छा में अपनी इच्छा मिला देने से शिष्य का कल्याण हो जाता है।

अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करने के लिए अपने से उच्च पुरुषों की देखरेख में रहना चाहिए। अपनी इच्छा पूरी करने से साधक की साधना में बरकत नहीं आती। संत कबीरजी ने कहा है :

मेरो चिंत्यो होत नहिं, हरि को चिंत्यो होय।
हरि को चिंत्यो हरि करे, मैं रहूँ निश्चिंत॥

(शेष पृष्ठ २० पर)

मूर्त से अमूर्त की ओर...

(श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती : १० मार्च)

श्री रामकृष्ण परमहंस के साधनकाल में दो व्यक्तियों ने उनकी बहुत सेवा की थी । एक उनके भानजे हृदय ने और दूसरे कलकत्ते (वर्तमान कोलकाता) की प्रसिद्ध रईस रानी रासमणि के दामाद मथुरबाबू ने।

विजयादशमी का दिन था । संध्या के समय माँ दुर्गा की प्रतिमा का विसर्जन होना था । सबको यह सोचकर बुरा लग रहा था कि 'देवी के चले जाने पर यह आनंद-उत्सव नहीं रहेगा ।' पुरोहित ने मथुरबाबू को संदेशा भेजा कि ''विसर्जन होने के पहले आकर देवी को प्रणाम कर लें ।''

मथुरबाबू को धक्का लगा कि 'आज माँ का विसर्जन करना होगा ! पर क्यों ? माँ और रामकृष्णदेव की कृपा से मुझे किसी बात की कमी नहीं है, फिर माँ का विसर्जन क्यों ?' ऐसा सोचते हुए वे चुपचाप बैठे रहे।

समय हो रहा था, पुरोहित ने पुनः समाचार भेजा । मथुरबाबू ने कहला भेजा कि ''माँ का विसर्जन नहीं किया जायेगा । इतने दिन तक जैसे पूजा चल रही थी, वैसे ही चलती रहेगी । यदि मेरे मत के विरुद्ध किसीने किया तो ठीक न होगा ! माँ की कृपा से जब मुझमें उनकी नित्य पूजा करने का सामर्थ्य है तो मैं क्यों विसर्जन करूँ !''

मथुरबाबू के हठी स्वभाव के आगे सभी हार मान गये । उनकी सम्मति के विरुद्ध विसर्जन करना सम्भव नहीं था । अंत में रामकृष्णजी से प्रार्थना की गयी । परमहंसजी उनके पास गये तो वे बोले : ''बाबा ! चाहे कुछ भी हो, मैं अपने जीवित रहते माँ का विसर्जन नहीं होने दूँगा । मैं माँ को छोड़कर कैसे रह सकता हूँ !''

रामकृष्णजी ने उनकी छाती पर हाथ रखकर कहा : ''ओह ! तुम्हें इसी बात का डर है ? तुम्हें माँ को छोड़कर रहने को कौन कह रहा है और यदि तुमने विसर्जन कर भी दिया तो वे कहाँ चली जायेंगी ? इतने दिन माँ ने तुम्हारे पूजन-मंडप में पूजा ग्रहण की पर आज से वे और भी अधिक समीप रहकर प्रत्यक्ष तुम्हारे हृदय में विराजित हो के पूजा ग्रहण करेंगी, तब तो ठीक है न ?''

रामकृष्णजी के स्पर्श से मथुरबाबू के हृदय में जो अनुभूति हुई, उससे उनका बाह्य पूजन का आग्रह अपने-आप हट गया।

आत्मानुभवी संत अपने भक्तों को आत्मानंद की ओर ले जाने के लिए अंदर की आत्मिक दिव्यता की अनुभूति कराते हैं । पूज्य बापूजी के सान्निध्य में होनेवाले ध्यानयोग शक्तिपात साधना शिविरों में लाखों-लाखों लोग ऐसी दिव्य अनुभूतियों का लाभ लेते हैं।

पूज्य बापूजी सबसे सरल तथा सर्वोच्च फल प्रदान करे ऐसा अंतर्यामी आत्मदेव का पूजन बताते हुए कहते हैं : ''उस आत्मदेव का पूजन न चंदन, केसर, कस्तूरी से होता है न धूप-दीप, (शेष पृष्ठ २६ पर)
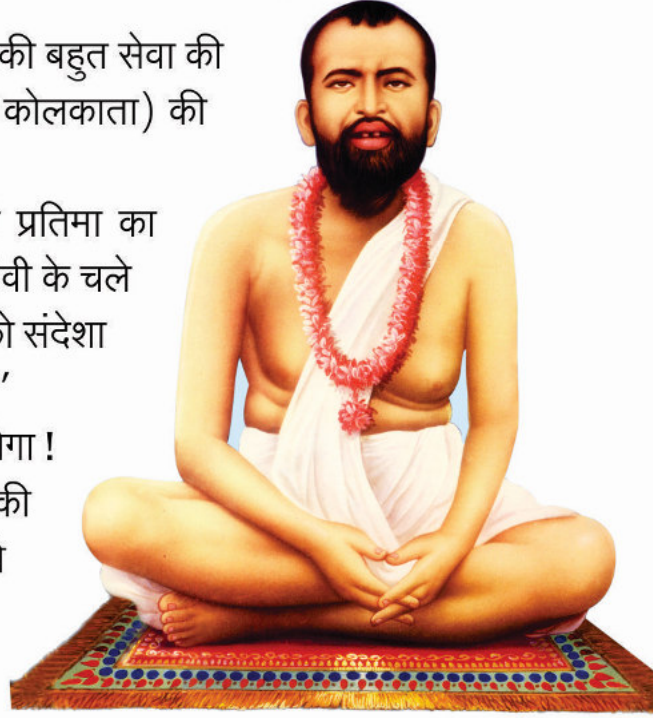
जहाँ अपने धर्म, आत्मज्ञान अथवा महापुरुषों के प्रति हमारी श्रद्धा डगमगाये,
ऐसी परिस्थितियों से, ऐसे लोगों से अपने को बचाओ ।

सब लोग किसे चाहते हैं ?

जो व्यक्ति अच्छा व्यवहार करता है, ईमानदार है, सच्चा है तो उसे सब पसंद करते हैं। उसके पास बैठने में, उससे बात करने में हमें आनंद मिलता है । नम्रता, सहनशीलता, साहस, कार्य में लगन, आत्मविश्वास, विश्वासपात्रता, दयालुता, ईमानदारी, दृढ़ निश्चय, तत्परता, सत्यनिष्ठा इत्यादि अनेक उत्तम गुण हैं, जिनके मेल से मनुष्य का चरित्र बनता है। चरित्र का धन कोई साधारण धन नहीं है। इनमें से कुछ गुणों को भी पूरी तरह धारण करने से मनुष्य का जीवन सफल हो जाता है।

चरित्र-निर्माण कब और कैसे ?

चरित्र-निर्माण का सबसे अच्छा समय है बचपन। उस समय अच्छी आदतें सीखना आसान होता है । ये आदतें जीवनभर काम आती हैं। बालकों को जो बातें बतायी या सिखायी जाती हैं, वे उनके मन पर पक्की हो जाती हैं। गुरुजनों का, सद्गुरु का सम्मान करने से और उनकी आज्ञा मानने से विद्या प्राप्त होती है। अर्जुन ने इसी प्रकार गुरु से धनुर्विद्या प्राप्त की थी । भगवान श्रीरामचन्द्रजी ने गुरु वसिष्ठजी के आज्ञापालन से ही आत्मविद्या पायी थी।

मनुष्य के जीवन की नींव है चरित्र। शब्दों में नहीं बल्कि व्यवहार में प्रकट होते हैं चरित्र के गुण। दिखावट-बनावट से मनुष्य कुछ समय के लिए भले ही किसीको धोखे में रख ले परंतु ज्यादा समय तक धोखे में नहीं रख सकता। लोग चरित्रवान व्यक्ति की बात का विश्वास करते हैं। उसे उपयोगी तथा हितकारी मानते हैं। चरित्रवान दूसरों को धोखा नहीं देता, किसीको नीचे गिराने की कोशिश नहीं करता। वह ऐसी बात का प्रण नहीं करता, जिसे वह पूरा न कर सके।

उत्तम चरित्र क्या है ?

सच्चरित्रवान बनने के लिए मन, वाणी तथा शरीर से किसीको कष्ट मत दो। सच बात को भी प्रिय शब्दों में कहो। किसीकी चीज न चुराओ, निंदा न करो। मान की लालसा मत करो। स्नान से शरीर की तथा ईर्ष्या-द्वेष,

वैर-विरोध छोड़ने से मन की शुद्धि होती है । सर्दी-गर्मी, सुख-दुःख सहते हुए अपने कर्तव्य को करो । सत्साहित्य का अध्ययन करते रहो । इन्द्रियों और मन को वश में रखकर अपने स्वभाव को सरल बनाओ । दुःखियों की सेवा करो । पूज्य बापूजी कहते हैं : ''परमात्मा से दूर ले जानेवाली जो दुष्ट वासनाएँ हैं, वे सब दुश्चरित्र हैं। जब हम दुश्चरित्रों से दूर होते हैं तो हम सच्चरित्र होते हैं। सच्चरित्रता से पुण्य होते हैं और पुण्य से हमको सत्संग, संत के दर्शन और परमात्मा में रुचि होती है।

पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता ।''

(संत तुलसीदासजी)

चरित्रवान के लक्षण

चरित्रवान मनुष्य बहुत अधिक चतुर बनने का प्रयत्न नहीं करता। सीधा-सच्चा व्यक्ति लोगों को अधिक प्रिय होता है। चरित्रवान अपने कार्यों की बड़ाई करके दूसरों को नीचा दिखाने का प्रयत्न नहीं करता। वह धैर्यवान तथा सहनशील होता है। वह दूसरों के मत को ध्यान एवं धैर्य से सुनता है। चाहे उसे दूसरे का मत ठीक न लगता हो फिर भी सुनने का धैर्य उसमें होता है। यदि वह किसीको उसकी भूल बताता है तो बड़ी नरमी से, तरीके से और उसके सुधार के लिए बताता है। चरित्रवान किसीका उत्साह भंग नहीं करता, वह किसीका दिल नहीं तोड़ता, वह सभीको नेक काम करने की सलाह देता है एवं उत्साहित करता है। वह स्वयं भी हिम्मत नहीं हारता। चरित्रवान मनुष्य सुख और दुःख में सम रहता है। विपत्ति के समय में वह सगे-संबंधियों या मित्रों को धोखा नहीं देता। ऐसी ही मित्रता श्रीकृष्ण ने सुदामा के प्रति निभायी थी। मित्रता निभाना भी सच्चरित्रता की निशानी है।

चरित्र : मानव की एक श्रेष्ठ सम्पत्ति

जो अपना कल्याण चाहता है उसे चरित्रवान बनना चाहिए। यदि हम चरित्रवान हैं, सत्कृत्य करते हैं तो हमारी बुद्धि सही निर्णय लेती है, हमें सन्मार्ग पर प्रेरित करती है । सन्मार्ग पर चलकर हम परमात्मप्राप्ति के लक्ष्य को आसानी से पा सकते हैं।

चरित्र मानव की श्रेष्ठ सम्पत्ति है, दुनिया की समस्त सम्पदाओं में महान सम्पदा है। मानव-शरीर के पंचभूतों में विलीन होने के बाद भी जिसका अस्तित्व बना रहता है, वह है उसका चरित्र। चरित्रवान व्यक्ति ही समाज, राष्ट्र व विश्व-समुदाय का सही नेतृत्व और मार्गदर्शन कर सकता है । अपने सच्चारित्र्य व सत्कर्मों से ही मानव चिरआदरणीय हो जाता है। जब हमारे जीवन का मुख्य उद्देश्य सत्स्वरूप ईश्वर होता है तो सच्चरित्रता में हम दृढ़ होते जाते हैं। **सच्चरित्रवान बनने के लिए अपना आदर्श ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों को बनाना चाहिए।**

जिसके पास सच्चरित्र नहीं है वह बाहर से भले बड़ा आदमी कहा जाय परंतु उसे अंदर की शांति नहीं मिलेगी एवं उसका भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा। जिसके पास धन, सत्ता कम है परंतु सच्चारित्र्य-बल है, उसे अभी चाहे कोई जानता, पहचानता या मानता न हो परंतु उसके हृदय में जो शांति रहेगी, आनंद रहेगा, ज्ञान रहेगा वह अद्भुत होगा और उसका भविष्य परब्रह्म-परमात्मा के साक्षात्कार से उज्ज्वल होगा।

******

(पृष्ठ २४ से 'मूर्त से ... ' का शेष) अगरबत्ती से होता है। उस देव का पूजन तो सहज, स्वाभाविक होता है और हर जगह पर, हर परिस्थिति में, हर क्षण में हो सकता है। उसका पूजन यही है कि 'हे चिदानंद ! हे चैतन्य ! हे शांतस्वरूप ! हे आनंदस्वरूप ! ये सारे भाव जहाँ से उठते हैं, वह सब भावों का साक्षी, आधारस्वरूप तू है। जय हो सच्चिदानंद !' ऐसा चिंतन हृदय करता है तो उसका पूजन हो ही गया। पूजन में बस चित्त की वृत्तियाँ शांत होने लगें। उसीके परम चिंतन से तुम्हारा चित्त शुद्ध होता जायेगा, उसीमय होता जायेगा। बस, कितना आसान और ऊँचा पूजन है !''

ऐसा ही आत्मदेव का पूजन भगवान शिवजी ने वसिष्ठजी को बताया था, जिसका वर्णन 'योगवासिष्ठ महारामायण'

जो अपनी अहंता-ममता को शरीर और शरीर के संबंधों से हटाकर भगवान में लगा देता है, वह देर-सवेर भगवत्स्वरूप को प्राप्त हो जाता है ।

संतों की अनोखी युक्ति

(ऋषि दयानंद जयंती : ४ मार्च)

झेलम (अखंड भारत के पंजाब प्रांत का एक शहर) में एक दिन ऋषि दयानंदजी का सत्संग सम्पन्न हुआ । अमीचंद ने भजन गाया । दयानंदजी ने उसकी प्रशंसा की । वह जब चला गया तो लोगों ने दयानंदजी से बोला : ''यह तो तहसीलदार है परंतु चरित्रहीन है । अपनी पत्नी को मारता है, उसे घर से निकाल दिया है । शराब पीता है, मांस खाता है...'' इस प्रकार बहुत निंदा की ।

दूसरे दिन वह आया । ऋषि दयानंदजी ने उसको फिर से भजन गाने को कहा । उसने भजन गाया और उन्होंने फिर से प्रशंसा की : ''तू भजन तो ऐसा गाता है कि मेरा हृदय भर गया । मैं तो कल भी, आज भी भावविभोर हो गया लेकिन देख यार ! सफेद चादर पर एक गंदा दाग लगा है । तू द्वेष करता है, अपनी पत्नी पर हाथ उठाता है । अपनी पत्नी के प्रति द्वेषबुद्धि छोड़ दे । अपनी बुराइयाँ व अहंकार छोड़ दे तो तू हीरा होकर चमकेगा । अरे, हीरा भी कुछ नहीं होता । हीरों-का-हीरा तो तेरा आत्मा है ।...'' और वह तहसीलदार बदल गया । उसने सारी बुरी आदतें छोड़ दीं और आगे चलकर संगीतकार महता अमीचंद के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

किसीकी बुराई देखकर संत उसको ठुकराते नहीं हैं लेकिन उसकी अच्छाई को प्रोत्साहित करके उसकी बुराई उखाड़ के फेंक देते हैं । इसलिए संत का सान्निध्य भगवान के सान्निध्य से भी बढ़कर माना गया है । भगवान तो माया बनाते हैं, बंधन भी बनाते हैं । संत माया नहीं बनाते, बंधन नहीं बनाते, बंधन काट के मुक्त कर देते हैं, इसलिए भगवान और संत को खूब स्नेह से सुनें और उनकी बात मानें ।

नाभिपीड़ासन

लाभ : (१) इस आसन के अभ्यास से हाथों और पैरों को बल मिलता है ।

(२) पेट एवं आँतों की शक्ति में वृद्धि होती है ।

(३) प्राणों की गति सम होती है और यदाकदा सुषुम्ना में भी उसकी गति होने लगती है ।

(४) वीर्यवाहिनी नाड़ियाँ पुष्ट होती हैं ।

विधि : मोटे कम्बल या मुलायम आसन पर पैरों को सामने फैलाकर बैठ जायें । फिर पैरों के पंजों को पकड़ के तलवों को आपस में मिला दें । अब पैरों की एड़ियों एवं अँगूठों को पेट और छाती से स्पर्श कराने की कोशिश करें । अपनी शक्ति के अनुसार १-२ मिनट प्रयास करने के बाद पैरों को ढीला छोड़ दें । प्रारम्भ में कठिनाई हो सकती है पर कुछ सप्ताह के अभ्यास से अँगूठे छाती से व एड़ियाँ पेट से लगने लगेंगी ।

आप अपने सुख की ललक छोड़कर दूसरों के दुःख मिटाने में लग जायें
तो दुःखहारी श्रीहरि की सत्ता आपको निर्दुःख कर देगी ।

एक शक्ति जो मनुष्य की अपेक्षा उच्चतर है

– श्री रमण महर्षि

गुरु का अनुग्रह तुमको जल से बाहर निकालने के लिए सहायता हेतु बढ़ाये गये हाथ के समान है अथवा वह अविद्या को दूर करने के लिए तुम्हारे (ईश्वरप्राप्ति के) मार्ग को सरल कर देता है। गुरु, अनुग्रह, ईश्वर आदि की यह सब चर्चा क्या है ? क्या गुरु तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हारे कान में धीरे-से कुछ कह देते हैं ? तुम उसका अनुमान अपने जैसा ही कर लेते हो चूँकि तुम एक देह के साथ हो, तुम सोचते हो कि तुम्हारे लिए कुछ निश्चित कार्य करने के लिए वे भी एक देह हैं। उनका कार्य आंतरिक है।
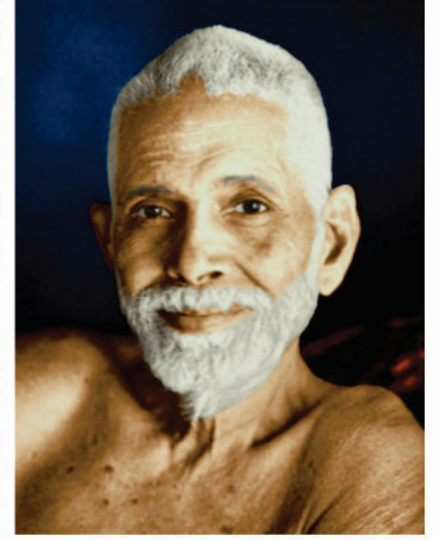
गुरु की प्राप्ति किस प्रकार होती है ? परमात्मा, जो सर्वव्यापी है, अपने अनुग्रह में अपने प्रिय भक्त पर करुणा करता है और भक्त के मापदंड के अनुसार अपने-आपको प्राणी के रूप में प्रकट करता है। भक्त सोचता है कि वे मनुष्य हैं और देहों के मध्य जैसे संबंध होते हैं वैसे संबंध की आशा करता है परंतु गुरु, जो कि ईश्वर अथवा आत्मा के अवतार हैं, अंदर से कार्य करते हैं। व्यक्ति की उसके मार्ग की भूलों को देखने में सहायता करते हैं और जब तक उसे अंदर आत्मा का साक्षात् नहीं हो जाय, तब तक सन्मार्ग पर चलने के लिए उसका मार्गदर्शन करते हैं । ऐसे साक्षात्कार के पश्चात् शिष्य को अनुभव होता है, 'पहले मैं कितना चिंतित रहता था, आज मैं वही पूर्ववत् आत्मा ही हूँ पर किसी भी वस्तु से प्रभावित नहीं हूँ। जो दुःखी था, वह कहाँ है ? वह कहीं भी नहीं दिखता।'

अब हमारा क्या कर्तव्य है ? केवल गुरु के वचनों का पालन करो, अंदर प्रयत्न करो। गुरु अंदर भी हैं और बाहर भी। इस प्रकार वे तुम्हारे लिए अंदर अग्रसर होने की परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं और तुम्हें केन्द्र तक खींचने के लिए अंतरंग को उद्यत करते हैं। इस प्रकार गुरु बाहर से धक्का देते हैं और अंदर से खींचते हैं, जिससे तुम केन्द्र पर स्थिर हो सको।

सुषुप्ति में तुम अंदर केन्द्रित होते हो। जाग्रत होने के साथ ही तुम्हारा मन बहिर्मुख होता है एवं इस, उस तथा अन्य समस्त वस्तुओं पर विचार करने लगता है। इसका निरोध आवश्यक है। यह उसी शक्ति के द्वारा सम्भव हो सकता है जो अंदर तथा बाहर – दोनों ओर कार्य कर सकती है। क्या उसका एक देह से तादात्म्य किया जा सकता है ? हम सोचते हैं कि 'हम अपने प्रयास से जगत पर विजय पा सकते हैं।' जब हम बाहर से हताश हो जाते हैं और अंतर्मुख होते हैं तो हमें लगता है, 'ओह ! ओह ! एक शक्ति है जो मनुष्य की अपेक्षा उच्चतर है।' उच्चतर शक्ति का अस्तित्व स्वीकृत एवं मान्य करना ही होगा। अहंकार अत्यंत शक्तिशाली हाथी है तथा इसे सिंह से कम कोई भी वश नहीं कर सकता, जो इस उदाहरण में गुरु के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं है, जिनका दर्शनमात्र हाथी को कम्पित कर खत्म कर देता है। समय आने पर ही हमें यह मालूम होगा कि जब हम नहीं होते हैं तभी हमारा ऐश्वर्य (महानता, सामर्थ्य) होता है । उस अवस्था को प्राप्त करने हेतु मनुष्य को अपने-आपको समर्पित करते हुए कहना होगा, 'प्रभु ! आप मेरे आश्रयदाता हैं !' तब गुरु देखते हैं कि 'यह व्यक्ति कृपापात्र है' और कृपा करते हैं।

मनुष्य-जीवन की विलक्षणता
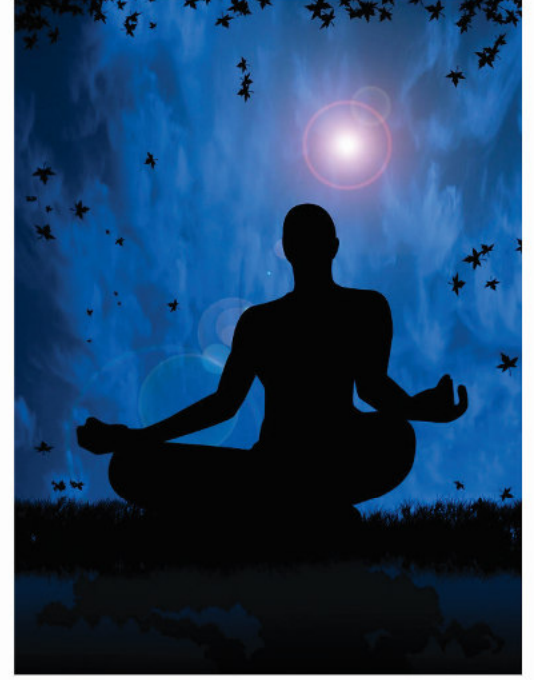
परब्रह्म-परमात्मा में, जो अपना स्वरूप ही है, तीन भाव माने जाते हैं - सत्, चित् और आनंद। मनुष्य में इन्हीं भावों का जब विकास होता है, तभी उसमें ५ अथवा अधिक कलाओं का विकास माना जाता है। यह विकास मनुष्य में ही सम्भव है, अतः मनुष्य शरीर दुर्लभ है।

सत् के विकास में कर्म का विकास है। चित् के विकास में ज्ञान का विकास है और आनंद के विकास में सुख का विकास है। कर्म, ज्ञान और आनंद का जैसा विकास मनुष्य के जीवन में है, वैसा सृष्टि में कहीं नहीं है। विश्व की सभ्यता और संस्कृति का इतिहास इसका साक्षी है। यह विकास अभी जारी है इसलिए मनुष्य-जन्म दुर्लभ है, जिसको प्राप्त करके हम संसार के सम्पूर्ण बंधनों, दुःखों और अनर्थों से छूट सकते हैं।

पेड़-पौधे अपनी खुराक अपने पाँव (नीचे) से ग्रहण करते हैं और ऊपर की ओर बढ़ते हैं। शास्त्र में इनको 'ऊर्ध्वस्रोत' बोलते हैं। प्रकृति ने अभी उन्हें बढ़ने के लिए बहुत-सा अवकाश दिया है।

पक्षी आगे से भोजन लेते हैं और वह पीछे जाता है। वे 'तिर्यक्-स्रोत' हैं। पशु एवं स्वेदज (पसीने से उत्पन्न) प्राणी भी तिर्यक्-स्रोत हैं। परंतु मनुष्य 'अधःस्रोत' है; वह भोजन ऊपर से लेता है और नीचे की ओर फेंकता है।

विद्वानों ने इसका अर्थ किया है कि प्रकृति स्वयं में प्राणी को जितना उन्नत बना सकती थी, उतना उसने मनुष्य को बना दिया है। इसके आगे मनुष्य अपना स्वयं विकास करे।

वह अपनी बुद्धि को इतनी विकसित कर सकता है कि वह परमेश्वर से एक हो जाय। यह अवसर अन्य प्राणि-शरीर में प्राप्त नहीं है। इसलिए मनुष्य का शरीर मिलना दुर्लभ है।

इस मनुष्य-शरीर में आप आनंद की पूर्णता का अनुभव कर सकते हैं, ज्ञान की पूर्णता का अनुभव कर सकते हैं और अविनाशी जीवन प्राप्त कर सकते हैं। अविनाशी ईश्वर, पूर्ण ज्ञानस्वरूप ईश्वर, पूर्णानंदस्वरूप ईश्वर आपके हृदय में प्रकट हो सकते हैं। इसलिए यह मनुष्य का शरीर ईश्वर के अनुग्रह से प्राप्त होता है।

हम स्वयं चाह के मनुष्य-शरीर प्राप्त नहीं कर सकते। मनुष्य-जन्म पाने में हमारी स्वतंत्रता नहीं; तो पूर्वजन्मों के पुण्यों के फल से, ईश्वर की कृपा से (अर्थात् प्रकृति के विकास से धर्म के फलस्वरूप) यह मनुष्य-शरीर प्राप्त हुआ है। अतः यह बड़ा दुर्लभ है। मनुष्य में स्त्री भी है और पुरुष भी। दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। किंतु ईश्वर का अनुग्रह दोनों पर है क्योंकि दोनों सद्बुद्धिसम्पन्न मनुष्य हैं।

'श्रीमद्भागवत' में आया है कि ईश्वर ने अपनी माया से तरह-तरह के शरीर बनाये - वृक्ष, रेंगनेवाले कीड़े, पशु,

पक्षी, मच्छर आदि परंतु उनको देखकर उसको कोई विशेष आनंद नहीं हुआ । उसे विशेष आनंद तब हुआ जब उसने मनुष्य-शरीर की रचना को देखा, 'अहा ! मैंने ऐसा शरीर बनाया है जिसमें ब्रह्मानुभूति की योग्यता है ।'

सब प्राणी केवल ऐन्द्रियक विषयों को ही जानते हैं किंतु अतीन्द्रिय वस्तु परमेश्वर के दर्शन का जो यंत्र है - प्रमाण वृत्ति, वह मनुष्य के अतिरिक्त और किसी प्राणी के पास नहीं है । न उनके पास साधन-चतुष्टय का अभ्यास है, न उनके पास वेद-शास्त्रादि का श्रवण है, न तो 'अहं ब्रह्मास्मि' इस ब्रह्माकार वृत्ति के उदय होने की कोई सामग्री ही उनके पास है । अतः मनुष्य के अतिरिक्त अन्य कोई प्राणी ब्रह्मानुभूति की योग्यता नहीं रखता । इसलिए केवल मनुष्य-योनि में ही तत्त्वज्ञान हो सकता है ।

ईश्वर का यह बड़ा अनुग्रह है कि उसने हमको यह मनुष्य का शरीर प्रदान किया है । यह तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के लिए ही है क्योंकि अन्य योनियों से मनुष्य की विलक्षणता इसी योग्यता में है । अन्य बातें तो सभी योनियों में उपलब्ध हो जाती हैं ।

(पृष्ठ ३१ से 'ब्रह्मज्ञान का ... ' का शेष) सभी शून्य तथा अशून्य को निःसंदेह आत्मस्वरूप समझो ।'

सर्वभूते स्थितं ब्रह्म भेदाभेदो न विद्यते ।
एकमेवाभिपश्यँश्च जीवन्मुक्तः स उच्यते ।।

(जीवन्मुक्त गीता : ५)

'सभी प्राणियों में स्थित ब्रह्म (परमात्मा) भेद और अभेद से परे है (एक होने के कारण भेद से परे और अनेक रूपों में दिखने के कारण अभेद से परे है) । इस प्रकार अद्वितीय परम तत्त्व को सर्वत्र व्याप्त देखनेवाला (सतत अनुभव करनेवाला) मनुष्य ही

खोजो तो जानें

नीचे दिये गये प्रश्नों के आधार पर वर्ग-पहेली में से उत्तर खोजिये ।

(१) भगवान शिव की वह कौन-सी प्रिय वस्तु है जिसके दर्शन और स्पर्श से तथा जिसकी माला से जप करने से समस्त पापों का हरण माना गया है ?

(२) भगवान शिवजी अपने किस श्रृंगार से हमें सत्त्व, रज व तम - तीनों गुणों से पार होने की शिक्षा देते हैं ?

(३) शिवजी के तीन नेत्र होने के कारण उनका क्या नाम पड़ा ?

(४) फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की किस तिथि को महाशिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है ?

(५) वह कौन-सा वृक्ष है जिसको शास्त्रों में भगवान शिव का स्वरूप बताया गया है ?

(६) महाशिवरात्रि को किस बीजमंत्र का सवा लाख जप करने से गठिया तथा वायु संबंधी ८० प्रकार की तकलीफों को दूर करने में मदद मिलती है ?

(उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होंगे ।)

नी	ल	नु	द	च	य	ल	ट	व	ड़	व	रं
या	त	ठ	नू	त्रि	पुं	ड	रे	खा	रा	न	ज
न	ज	चि	दुः	लो	तः	ब	ञ	रि	छ	भ	क
ठ	ध	ख	झ	च	तु	र्द	शी	छ	कं	ह	हं
सो	सु	क	छ	न	न	मि	णा	त	ऊ	धी	य
न	य	त	तिः	मा	ग	प	थं	गु	जो	र	स
क	बं	रा	ची	स्तु	घ	खं	दा	झ	वि	क	प
स	ऊ	बं	क	फ	सं	थ	मु	वा	गी	च	बि
जी	मा	ख	त्रं	ढ	त्म	ट	र	त्या	य	ल	कृ
रु	त्रा	ब	क	स्व	पे	द्वा	रि	फ	व	झ	स
स	द्रा	ज	री	प्र	द	प	द	की	जी	क	रा
व्या	प	क्ष	ग	शी	न	ब	भ	ओ	धि	ड	री

ब्रह्मज्ञान का कल्याणकारी विवेचन

'अवधूत गीता' में श्री दत्तात्रेयजी ने साधकों के कल्याणार्थ वेदांत-मार्ग द्वारा गूढ़ ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति का सुंदर विवेचन किया है।

आत्मानं सततं विद्धि सर्वत्रैकं निरन्तरम् ।
अहं ध्याता परं ध्येयमखण्डं खण्ड्यते कथम् ।।

(अवधूत गीता : १.१२)

'आत्मा को (स्वयं को) तुम सर्वदा, सर्वत्र, एक एवं अबाधित (अवरोध या रुकावट रहित) जानो। 'मैं ध्याता (ध्यान करनेवाला) हूँ' तथा 'आत्मा ध्येय (जिसका ध्यान किया जाता है वह) है' - (ऐसा यदि तुम कहते हो) तो फिर भेदरहित आत्मा को भेदयुक्त कैसे किया जा सकता है ?'

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''ध्यान करने से सत्त्वगुण की वृद्धि होती है तो अत्यधिक आनंद आने लगता है। साक्षीभाव है, फिर भी एक रुकावट है। 'मैं साक्षी हूँ, मैं आनंदस्वरूप हूँ, मैं आत्मा हूँ...' आरम्भ में ऐसा चिंतन ठीक है लेकिन बाद में यहीं रुकना ठीक नहीं। 'मैं आत्मा हूँ, ये अनात्मा हैं, ये दुःखरूप हैं...' इस परिच्छिन्नता के बने रहने तक परमानंद की प्राप्ति नहीं होती। सात्त्विक आनंद से भी पार जो ऊँची स्थिति है, वह प्राप्त नहीं होती। अतएव फिर उसके साथ योग करना पड़ता है कि 'यह आनंदस्वरूप आत्मा वहाँ भी है और यहाँ भी है। मैं यहाँ केवल मेरी देह की इन चमड़े की दीवारों को 'मैं' मानता हूँ अन्यथा मैं तो प्रत्येक स्थान पर आनंदस्वरूप हूँ।'

ऐसा निश्चय करके जब उस तत्पर साधक को अभेद ज्ञान हो जाता है तो उसकी स्थिति अवर्णनीय होती है, लाबयान होती है, वह जीवन्मुक्त हो जाता है। ब्रह्माकार वृत्ति से अविद्या सदा के लिए समाप्त हो जाती है।

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि ।

(श्री रामचरित. बा.कां. : ७)

बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ।।

(गुरुवाणी)

रामायण, गुरुग्रंथ साहिब और उपनिषदों के परम लक्ष्य में वह परितृप्त रहता है।

ईशा वास्यमिदँ सर्वं... (ईशावास्योपनिषद् : १)

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः । (गीता : ७.१९)

वह ऐसा हो जाता है। दर्शनीय, पूजनीय, उपासनीय हो जाता है।''

न जातो न मृतोऽसि त्वं न ते देहः कदाचन । सर्वं ब्रह्मेति विख्यातं ब्रवीति बहुधा श्रुतिः ।।

(अवधूत गीता : १.१३)

'(हे शिष्य !) वास्तव में तुम न तो उत्पन्न होते हो और न मरते ही हो, न तो यह देह ही कभी तुम्हारी है। सम्पूर्ण जगत ब्रह्म ही है - ऐसा प्रसिद्ध है और श्रुति भी अनेक प्रकार से ऐसा ही कहती है।'

सर्वत्र सर्वदा सर्वमात्मानं सततं ध्रुवम् ।
सर्वं शून्यमशून्यं च तन्मां विद्धि न संशयः ।। (अवधूत गीता : १.३३)

'आत्मा को सर्वत्र, सभी कालों में विद्यमान, सर्वरूप, सतत तथा शाश्वत जानो। (शेष पृष्ठ ३० पर)

आत्म-हीरा पहचान लो

– पूज्य बापूजी

एक जौहरी मर गये । उनका लड़का १४-१५ साल का था । उसने देखा कि 'पिताजी तो मर गये, अब क्या करें ? पिताजी ने एक संदूक छुपाकर रखा है ।' उसे खोला, उसमें बड़े-बड़े हीरे थे । लड़के ने सोचा, 'क्या करूँ इनका ?' चाचा को जाकर दिखाया : ''चाचा ! ये हीरे कितने के होंगे ?''

चाचा ने देखा कि 'अभी इनका मूल्य बताना ठीक नहीं है । यदि मैं (सच) बोलता हूँ कि 'बेटा ! ये तो नकली हीरे हैं' तो इसकी मेरे प्रति आस्था मिट जायेगी । यह खुद जानकार बनेगा तो बढ़िया रहेगा ।' चाचा बोला : ''बेटा ! देखो, मेरी उम्र ज्यादा हो गयी है, दिखता भी कम है, यादशक्ति भी बुढ़ापे में ऐसी ही होती है । तू होशियार है, थोड़े दिन अपने भाइयों के साथ आ-जा दुकान पर । तेरे पिताजी मर गये, मुझे तो तू अपने पितातुल्य मानता है, मेरी बात मान मेरे बेटे !'' उसको विश्वास में लिया । फिर बोले : ''तू ये हीरे परखने का धंधा सीख ले । तू तो २-४ महीने में बड़ा होशियार हो जायेगा । पढ़ने भी जाओ और साथ में काम भी सीखो । देर-सवेर तेरे को भी तो इस धंधे में मालिक बनना है न ! तू चिंता नहीं करना कि 'मेरा क्या होगा ?' मन मायूस मत करना ।'' इस प्रकार चाचा ने उत्साह भर दिया ।

यह बड़ों का कर्तव्य है कि छोटों को विश्वास में लें । वह लड़का लग गया और २-४ महीने में हीरा परखने में उसकी अच्छी गति हो गयी । फिर तो किसी भी हीरे को देखे तो बोल देता कि 'यह इतने का है...', ज्यादा तोल-मोल नहीं, ऐसा होशियार हो गया ।

अपने बेटों से भाइयों के बेटों का ज्यादा विकास करनेवाला चाचा हो चाहे चाची हो, मौसी हो चाहे पड़ोसन हो, अपनेवालों के प्रति न्याय और दूसरों के प्रति उदारता, आपका यह सिद्धांत लोग शिरोधार्य करेंगे । आप भी ऐसा करो ।

विफल क्यों होते हैं कि लोग अपनेवालों के प्रति ममता की खाई में गिरते हैं और दूसरे के प्रति बड़ा संकोच रखते हैं, ऐसा नहीं करो । जेठानी है तो देवरानी के बच्चों को ज्यादा प्यार किया कर और देवरानी है तो जेठानी के बच्चे के लिए उदार बन । ननद आ गयी है घर में अपने दो बच्चे लेकर तो भाभी का कर्तव्य है कि अपने बच्चों को थोड़ा न्याय की दृष्टि से कठोरतापूर्वक देख लेकिन ननद के बच्चों को उदारता से देख क्योंकि ५-२५ दिन के तो मेहमान हैं । ननद का दिल जीतने का यह तरीका है । और ननद के बच्चे और अपने बच्चे लड़ें तो भाभी का कर्तव्य है कि ननद के बच्चों को प्यार-पुचकार दे और अपने बच्चों को अलग से समझाये कि 'बच्चो ! वे अपने

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

पर्यावरण संरक्षण के लिए जरूरी है गोवध पर रोक : शोध

गाय से होनेवाले आधिभौतिक, आधिदैविक व आध्यात्मिक लाभों से समाज लाभान्वित हो इस उद्देश्य से हमारे शास्त्रों व संत-महापुरुषों ने गाय को सेवा करने योग्य और आदरणीय बताया है तथा गोपालन व गौ-संरक्षण की प्रेरणा दी है। 'ऋग्वेद' में कहा गया है : 'इन गौओं पर वध करने के लिए आघात न करें।'

आज विज्ञान भी गाय से होनेवाले अनगिनत लाभों को स्वीकार करता है एवं गोवध से होनेवाले भयंकर दुष्परिणामों को उजागर कर रहा है। गोवध पर्यावरण के लिए कितना घातक है यह बात आज कई वैज्ञानिक शोधों से सामने आ चुकी है।

'यूनाइटेड नेशन्स एनवायरनमेंट प्रोग्राम' ने गोमांस को पर्यावरणीय रूप से हानिकारक मांस बताते हुए कहा कि 'ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के मामले में एक किलो गोमांस-सेवन लगभग १६० कि.मी. तक किसी मोटरवाहन का इस्तेमाल करने के बराबर है।'

ब्रिटेन की 'यूनिवर्सिटी ऑफ लीड्स' के टिम बेंटन के अनुसार ''कार्बन फुटप्रिंट (कार्बन डाइऑक्साइड या ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन) घटाने के लिए लोग सबसे बड़ा जो योगदान कर सकते हैं, वह कारें छोड़ना नहीं है बल्कि लाल मांस खाना कम करना है।''

आलू, गेहूँ या चावल जैसे मूल खाद्यों की तुलना में गोमांस से प्रति कैलोरी ऊर्जा प्राप्त करने में १६० गुना अधिक जमीन लगती है और ११ गुना अधिक ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। लाल मांस (गोमांस) के उत्पादन के लिए अन्य मांस की तुलना में २८ गुना अधिक जमीन और ११ गुना अधिक पानी की आवश्यकता पड़ती है तथा ५ गुना अधिक ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है, जिससे वातावरण में तापमान की वृद्धि हो रही है। इसके कारण कहीं सूखे की समस्या बढ़ रही है तो कहीं समुद्र के जलस्तरों में बढ़ोतरी के कारण तटीय इलाके डूबते जा रहे हैं तो कहीं विनाशक तूफान आते हैं।

वर्ष २०१५ में विश्व में गोमांस का कुल उत्पादन ५,८४,४३,००० मीट्रिक टन हुआ और विश्व में पाँचवें स्थान पर भारत में ४२,००,००० मीट्रिक टन उत्पादन हुआ। (१ मीट्रिक टन = १००० कि.ग्रा.)

गोहत्या पर पाबंदी लगाना आज न केवल एक धार्मिक आस्था का विषय है बल्कि पर्यावरण का संतुलन बनाये रखने के लिए भी अनिवार्य है। प्राणिमात्र का मंगल चाहनेवाले भारतीय संत-महापुरुष तो आदिकाल से गायों का संरक्षण करते-करवाते आये हैं।

अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और मति की संकीर्णता को छोड़कर प्रत्येक व्यक्ति को गोवध पर रोक लगे इस हेतु अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार प्रयास अवश्य करने चाहिए और कम-से-कम अपने आसपास के लोगों में तो जागृति लानी ही चाहिए।

यह संदेश सरकार और उच्च पदों पर आसीन सभी अधिकारियों, सांसदों, विधायकों, जिलाधीशों एवं न्यायपालिका को पढ़ाना चाहिए।

आखिर कर्ण क्यों हारा ?

- पूज्य बापूजी

ऋषि-आश्रम में शिष्यों के बीच चर्चा छिड़ गयी कि 'अर्जुन के बल से कर्ण में बल ज्यादा था। बुद्धि भी कम नहीं थी। दानवीर भी बड़ा भारी था फिर भी कर्ण हार गया और अर्जुन जीत गये, इसमें क्या कारण था ?' कोई निर्णय पर नहीं पहुँच रहे थे, आखिर गुरुदेव के पास गये : ''गुरुजी ! कर्ण की जीत होनी चाहिए थी लेकिन अर्जुन की जीत हुई। इसका तात्त्विक रहस्य क्या होगा ?''

गुरुदेव बड़ी ऊँची कमाई के धनी थे। आत्मा-परमात्मा के साथ उनका सीधा संबंध था। वे बोले : ''व्यवस्था तो यह बताती है कि एक तरफ नन्हा प्रह्लाद है और दूसरी तरफ युद्ध में, राजनीति में कुशल हिरण्यकशिपु है; हिरण्यकशिपु की विजय होनी चाहिए और प्रह्लाद मरना चाहिए परंतु हिरण्यकशिपु मारा गया।

प्रह्लाद की बूआ होलिका को वरदान था कि अग्नि नहीं जलायेगी। उसने षड्यंत्र किया और हिरण्यकशिपु से कहा कि ''तुम्हारे बेटे को लेकर मैं चिता पर बैठ जाऊँगी तो वह जल जायेगा और मैं ज्यों-की-त्यों रहूँगी।'' व्यवस्था तो यह बताती है कि प्रह्लाद को जल जाना चाहिए परंतु इतिहास साक्षी है, होली का त्यौहार खबर देता है कि परमात्मा के भक्त के पक्ष में अग्नि देवता ने अपना निर्णय बदला, प्रह्लाद जीवित निकला और होलिका जल गयी।

रावण के पास धनबल, सत्ताबल, कपटबल, रूप बदलने का बल, न जाने कितने-कितने बल थे और लात मारकर निकाल दिया विभीषण को। लेकिन इतिहास साक्षी है कि सब बलों की ऐसी-तैसी हो गयी और विभीषण की विजय हुई।

इसका रहस्य है कि कर्ण के पास बल तो बहुत था लेकिन नारायण का बल नहीं था, नर का बल था। हिरण्यकशिपु व रावण के पास नरत्व का बल था लेकिन प्रह्लाद और विभीषण के पास भगवद्बल था, नर और नारायण का बल था। ऐसे ही अर्जुन नर हैं, अपने नर-बल को भूलकर संन्यास लेना

चाहते थे लेकिन भगवान ने कहा : ''तू अभी युद्ध के लिए आया है, क्षत्रियत्व तेरा स्वभाव है। तू अपने स्वाभाविक कर्म को छोड़कर संन्यास नहीं ले बल्कि अब नारायण के बल का उपयोग करके, नर ! तू सात्त्विक बल से विजयी हो जा !''

तो बेटा ! अर्जुन की विजय में नर के साथ नारायण के बल का सहयोग है इसलिए अर्जुन जीत गया।''

कई बुद्धिजीवियों में बुद्धि तो बहुत होती है, धन भी बहुत होता है, सत्ता की तिकड़मबाजी भी बहुत होती है, फिर भी अकेला नर-बल होने से उनका संतोषकारक जीवन नहीं मिलेगा, बिल्कुल पक्की बात है।

जिस नर के जीवन में परमात्मा की कृपा का, परमात्मा के सामर्थ्य, ज्ञान और माधुर्य का योग है वह नर सन्तुष्टः सततं योगी... अपने जीवन से, अपने अनुभवों से, अपनी उपलब्धियों से सतत संतुष्ट रहेगा। भोगी सतत संतुष्ट नहीं रह सकता।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।...

(गीता : १८.७८)

जहाँ पुरुषार्थ करनेवाला जीव होता है और ईश्वर की कृपा होती है, वहाँ श्री, विजय, विभूति और अचल नीति होती है। अब जो नर जितना उस योगेश्वर का आश्रय लेकर निर्णय करेगा, वह उतना विजयी रहेगा।

किसीके लिए मन में द्वेष न हो तो समझो नारायण का निवास है। किसीका बुरा नहीं सोचते हैं, फिर भी कोई गड़बड़ करता है तो अनुशासन के लिए किसीको बोल देते हैं लेकिन आपके हृदय में द्वेष नहीं है, सबके लिए हित की भावना है तो आप सबमें बसे नारायण के साथ जी रहे हो।

****

(पृष्ठ ३२ से 'आत्म-हीरा... ' का शेष) मेहमान हैं। अपने को प्रेम से रहना है, नहीं तो उनके दिल में हमारे लिए नफरत होगी। उनके अंतरात्मा की बद्दुआ अपने को क्यों मिले !' अगर बेटी बोले कि 'लेकिन वे ऐसे हैं, वैसे हैं...' तो उसे समझाये कि 'अरे कैसे भी हैं, हैं तो अपने ही। अपने रिश्तेदार हैं, अपने मेहमान हैं, क्यों ऐसे कटती है ? तू चाहे तो उनको प्यार से अपना बना सकती है बेटी !' यह तरकीब है।

'मैं इसको दिखा दूँगी, मैं उसको दिखा दूँगी...' अरे, सबके अंदर जो एक (परमात्मा) है वह तुम्हारे लिए आशीर्वाद छलकाये, तुम्हारे लिए कृपा छलकाये ऐसे समझदार, उदार, सज्जन बनो।

हीरे परखने की कला सीखते हुए उस लड़के को हुआ कि 'चलो, पिताजी के रखे हीरे देखें।' जाँचे तो वे नकली निकले।

नहीं पता था तो लगता था बहुत कीमती हैं लेकिन हीरे को परखना समझ गया तो सारे कंकड़-पत्थर तुच्छ हो गये। ऐसे ही आत्म-हीरा पहचानने का आप थोड़ा प्रशिक्षण ले लो, आपके हृदय में जो परमेश्वर है उसकी महत्ता का तुम सत्संग सुन लो फिर यह सारा जगत, जो संदूक में भरे हुए हीरों जैसा दिख रहा है, उसकी पोल खुल जायेगी। सब नश्वर है, बदलनेवाला है। इसमें महत्त्वबुद्धि करना मूर्खता है।

सफलता के ऊँचे शिखरों पर पहुँचने तथा वहाँ डटे रहने के लिए उत्तम चरित्ररूपी सीढ़ी का निर्माण अत्यंत आवश्यक है। जिस प्रकार व्यंजनों का आधार नमक, मिठाइयों का आधार शक्कर है उसी प्रकार व्यक्ति के जीवन का आधार उत्तम चरित्र होता है।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''चरित्र की पवित्रता हर कार्य में सक्षम बनाती है। जिसका जीवन संयमी है, सच्चरित्रता से परिपूर्ण है उसकी गाथा इतिहास के पन्नों पर अंकित की जाती है।''

गठिया आदि रोगों से मुक्ति

मुझे २०१० से गठिया की बीमारी थी । घुटनों में बहुत दर्द होता था । पैरों में बेल्ट पहनती थी फिर भी उठ-बैठ तक नहीं पाती थी । बहुत इलाज किया पर बीमारी बढ़ती जा रही थी । २०१३ में डॉक्टरों ने ऑपरेशन कर घुटना बदलने को कहा । बापूजी ऑपरेशन को मना करते हैं, अतः मैंने नहीं कराया और अंग्रेजी दवाइयाँ छोड़कर बापूजी द्वारा बताये गये 'बं-बं' मंत्र का महाशिवरात्रि को सवा लाख जप किया । इससे चमत्कारिक लाभ हुआ और गठिया ७०% ठीक हो गया ।

जून २०१३ में मुझे हरपीज (herpes) नामक अत्यंत पीड़ादायक बीमारी हुई, जिससे मैं एक माह तक नियम नहीं कर सकी । एक दिन बिस्तर पर लेटे-लेटे भजन सुन रही थी और गुरुदेव से प्रार्थना कर रही थी कि 'हे बापूजी ! मैं नियम नहीं कर पा रही हूँ, कहीं आप मुझे भूल तो नहीं गये ?' रोते-रोते न जाने कब नींद आ गयी । बापूजी सपने में आये और पुत्रीवत् स्नेह करते हुए सिर सहलाकर बोले : 'सब ठीक हो जायेगा । देख, मैं तुझे कैसे ठीक करता हूँ !' जब मैं सवेरे उठी तो स्वयं को पूरी तरह स्वस्थ तथा प्रसन्न महसूस कर रही थी । बेटी नाश्ता देने आयी तो उसने आश्चर्य से पूछा : ''माँ ! यह ॐ की आकृति आपके घुटनों के पास कैसे आयी ?''

गुरुवर की याद में मेरा हृदय भाव से और आँखें आँसुओं से भर गयीं । उसके बाद से गठिया पूरी तरह से ठीक हो गया । अब मैं आराम से सीढ़ी चढ़ती-उतरती हूँ, आश्रम जाती तथा सेवा करती हूँ । परम पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम !

- अंजना श्रीवास्तव, लखनऊ, सचल दूरभाष : ०८७६५८२८३०५

११ साल के बाद हुई संतान

मेरी शादी १९९९ में हुई थी पर ११ साल तक कोई संतान नहीं हुई । कई डॉक्टरों को दिखाया, झाड़-फूँक करायी, ताबीज बाँधे, कई जगह मन्नतें मानी । लगभग २-३ लाख रुपये खर्च किये पर कोई फायदा नहीं हुआ । हम लोग बहुत परेशान थे । परेशानी के उस दौर में पूज्य बापूजी का सहारा मिला । २००८ में बापूजी से मंत्रदीक्षा ले ली, तीन शिविर भरे तथा २०११ में संतानप्राप्ति का मंत्र ले लिया । मंत्र का श्रद्धा से जप किया और नियमों का पालन किया, फलतः बापूजी की कृपा से २०१२ में एक बेटी ने जन्म लिया । पहले मैं मानसिक तौर पर विक्षिप्त रहता था पर अब गुरुज्ञान के कारण निर्भय रहता हूँ । दीक्षा के पहले बहुत अनावश्यक खर्च करता था, अब नहीं करता हूँ । बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने से मुझे कई शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक लाभ हुए हैं ।

- बालकृष्ण मिरमपल्ली , हल्लखेड़, बिदर (कर्नाटक) सचल दूरभाष : ०९९०१६७३१६७

'श्री ब्रह्मरामायण' अमृत

विश्वेश अद्वय आत्म को, विरला जगत में जानता ।
जगदीश को जो जानता, नहीं भय किसीसे मानता ॥
ब्रह्माण्ड भर को प्यार करता, विश्व जिसका प्राण है ।
उस विश्व-प्यारे के लिए, सब हानि-लाभ समान है ॥
कोई न उसका शत्रु है, कोई न उसका मित्र है ।
कल्याण सबका चाहता है, सर्व का सन्मित्र है ॥
सब देश उसको एक से, बस्ती भले सुनसान है ।
भोला ! उसे फिर भय कहाँ, सब हानि-लाभ समान है ॥

(आश्रम से प्रकाशित 'श्री ब्रह्मरामायण' से)

एक्यूप्रेशर द्वारा गर्दन से संबंधित रोगों का इलाज

चित्र ४

चित्र ५

चित्र ६

(गतांक का शेष)

सहायक प्रतिबिम्ब केन्द्र
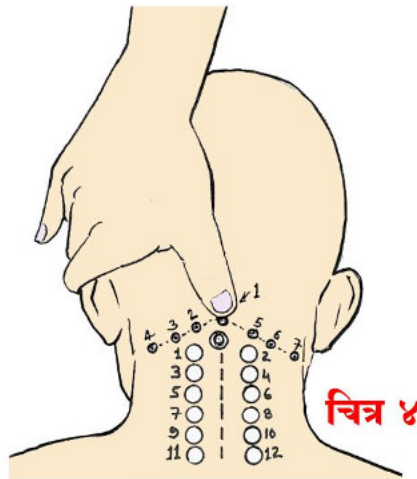
गर्दन के रोगों में गर्दन के पीछे भी दबाव दें । सबसे पहले गर्दन और खोपड़ी की मिलन रेखा का मध्य भाग (चित्र ४ का बिंदु १), जहाँ से रीढ़ की हड्डी शुरू होती है, उस पर हाथ के अँगूठे से तीन बार ५-७ सेकंड तक रोगी की सहनशक्ति के अनुसार दबाव दें । उसके बाद **चित्र ४** के बिंदु २, ३, ४, ५, ६, ७ पर ५-७ सेकंड तक तीन बार दबाव दें।
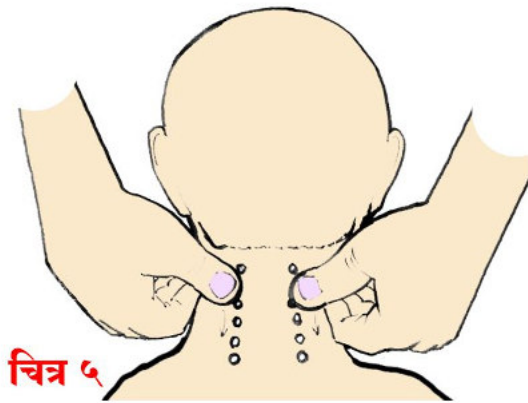
फिर रीढ़ की हड्डी के दोनों तरफ लगभग आधा इंच की दूरी पर चित्र ४ में दिखाये गये बिंदु १ से १२ पर **चित्र ५** में दिखायी गयी पद्धति के अनुसार तीन बार हलका दबाव दें।

इन केन्द्रों पर रोगी स्वयं भी अपने हाथ पीछे की ओर करके (**चित्र ६** के अनुसार) दबाव दे सकता है । अगर रोगी को चक्कर आते हों तो गर्दन के ऊपर किसी भी बिंदु पर दबाव नहीं देना चाहिए।

गर्दन के दर्द से बचाव हेतु : कड़े बिस्तर (तख्त या जमीन) पर कम्बल बिछा के सोयें। सिर झुकाकर कार्य करते समय बीच-बीच में २-३ मिनट विश्राम तथा हलका व्यायाम करें, जैसे कुछ देर गर्दन पीछे करके आकाश की ओर देखना आदि। रूई के पतले तकिये का उपयोग करना चाहिए।

भुजंगासन, ब्रह्म मुद्रा तथा शवासन नियमित रूप से करने पर सर्वाइकल स्पोंडिलोसिस से रक्षा होती है।

(यह लेख आपको कैसा लगा ? इस संबंध में अपनी प्रतिक्रिया या राय हमें अवश्य भेजें।)

जीवन में पूर्ण सफल वही होता है, पूर्ण जीवन वही जीता है, पूर्ण परमेश्वर को वही पाता है जो संयमी है, सदाचारी है और ब्रह्मचर्य का पालन करता है।

जिस विद्यार्थी के जीवन में संयम है, सदाचार है और यौवन-सुरक्षा के नियमों का पालन है वह जीवन के हर क्षेत्र में सहज में सफल होता है, बड़े-बड़े कार्य उसके द्वारा सम्पन्न हो सकते हैं। ब्रह्मचर्य शरीर का सम्राट है। ब्रह्मचर्य से बुद्धि, तेज और बल बढ़ता है। ब्रह्मचर्य से जीवन का सर्वांगीण विकास होता है। ब्रह्मचर्य जीवनदाता से मुलाकात कराने में अत्यंत सहायक होता है।

...किंतु आज के वातावरण में ब्रह्मचर्य का पालन कठिन होता जा रहा है। चारों ओर ब्रह्मचर्य का नाश करने के साधन सुलभ हैं। जीवन को तेजोहीन करने की सामग्रियाँ खुलेआम मिलती हैं। लोग अश्लील उपन्यास (नॉवेल्स) पढ़ते हैं, अश्लील गीत सुनते हैं, चलचित्र देखते हैं, व्यसन करते हैं। इससे उनके बल, बुद्धि, ओज-तेज और आयु का शीघ्र नाश हो जाता है और वे असमय ही वृद्धत्व का शिकार हो जाते हैं। - पूज्य बापूजी

कफदोष का प्रकोप व शमन

वसंत ऋतु में कफ कुपित रहता है। मधुर, नमकीन, चिकनाईयुक्त, शीत, भारी व ज्यादा आहार कफ उत्पन्न करता है। उड़द, तिल, सरसों, ककड़ी, खीरा, भिंडी, सूखे मेवे, सिंघाड़ा, सेब, अनन्नास, अमरूद, सीताफल, गन्ना, भैंस का दूध, मैदे के पदार्थ, दही, घी, मक्खन, मिश्री आदि कफ बढ़ाते हैं। अतः इनके सेवन से बचें।

कफ-शमन में सहायक आहार-विहार

तीखा, कड़वा व कसैला रस अधिक लें। काली मिर्च, हींग, तुलसी, अदरक, लौंग आदि का सेवन करें। आहार सूखा, सुपाच्य, अल्प व उष्ण गुणयुक्त लें। सहजन, मेथी, हल्दी, राई, अजवायन, मूँग, बिना छिलके के भुने हुए चने खायें एवं व्यायाम करें। फ्रिज का पानी न पियें, भोजन करके न सोयें, बासी और ठंडा व कफवर्धक पदार्थ - केला, चीकू, आइसक्रीम आदि न खायें।

* शहद कफ-शमन हेतु सर्वोत्तम है।

* पानी (१ लीटर) को उबालकर चौथाई भाग (२५० मि.ली.) शेष रहे। अनुकूल पड़े तो उसमें सोंठ के टुकड़े डालकर उबालें व पियें।

किस व्याधि में क्या है श्रेष्ठ औषधि ?

आमवात, अतिसार - सोंठ	कृमि - वायविडंग
दौर्बल्य - अश्वगंधा	अम्लपित्त - आँवला
मंदाग्नि - अदरक	संग्रहणी - छाछ
शीतपित्त - अजवायन	नेत्ररोग - त्रिफला

* ३ से ५ सूर्यभेदी प्राणायाम (बायाँ नथुना बंद कर दायें से गहरा श्वास ले के एक से सवा मिनट अंदर रोकें, फिर बायें से छोड़ें) दिन में २ बार करें।

* प्रातः गोमूत्र अथवा गोझरण अर्क या गोझरण वटी (आश्रमों व समितियों के सेवाकेन्द्रों में उपलब्ध) की १-२ गोली का सेवन समस्त कफरोगों में लाभदायी है।

भाग्य के कुअंक मिटाने की युक्ति

- पूज्य बापूजी

आसन बिछाकर प्रणव (ॐकार) का ३ मिनट ह्रस्व (जल्दी-जल्दी) व दीर्घ और ५ मिनट प्लुत (दीर्घ से अधिक लम्बा) उच्चारण करना चाहिए। कभी कम-ज्यादा हो जाय तो डरना नहीं। ४० दिन का यह नियम ले लो तो बहुत सारी योग्यताएँ जो सुषुप्त हैं, वे विकसित हो जायेंगी। मन की चंचलता मिटने लगेगी, बुद्धि के दोष दूर होने लगेंगे। सदा करते रहो तो बहुत अच्छा।

अपने भाग्य की रेखा बदलनी हो, अपनी ७२,७२,१०,२०१ नाड़ियों की शुद्धि करनी हो और अपने मन और बुद्धि को मधुमय करना हो तो संध्या के समय १०-१५ मिनट विद्युत-कुचालक आसन बिछाकर जप करे। भाग्य के कुअंक मिटा देगा यह प्रयोग।

बोधायन ऋषि प्रणीत

दरिद्रतानाशक प्रयोग

२८ दिन (४ सप्ताह) तक सफेद बछड़ेवाली सफेद गाय के दूध की खीर बनायें। खीर बनाते समय दूध को ज्यादा उबालना नहीं चाहिए। चावल पानी में पकायें, फिर दूध डालकर एक-दो उबाल दे दें। उस खीर का सूर्यनारायण को भोग लगायें। सूर्यनारायण का स्मरण करें और खीर को देखते-देखते एक हजार बार ॐकार का जप करें। फिर स्वयं भोग लगायें। जप के प्रारम्भ में यह विनियोग बोलें : ॐकार मंत्रः, गायत्री छंदः, भगवान नारायण ऋषिः, अंतर्यामी परमात्मा देवता, अंतर्यामी प्रीत्यर्थे, परमात्मप्राप्ति अर्थे जपे विनियोगः। इससे ब्रह्मचर्य की रक्षा होगी, तेजस्विता बढ़ेगी तथा सात जन्मों की दरिद्रता दूर होकर सुख-सम्पदा की प्राप्ति होगी।

भगवान, आत्मदेव में तीन बातें - पूज्य बापूजी

भगवान, आत्मदेव में तीन बातें ऐसी हैं कि और कहीं नहीं मिलेंगी। एक तो वह मरेगा नहीं। ब्रह्मलोक का नाश हो जायेगा, ब्रह्माजी मर जायेंगे, इन्द्र मर जायेंगे परंतु भगवान मरेंगे नहीं। दूसरी बात क्या है, बिछुड़ेगा नहीं। हमारे से अलग होकर बिछुड़ के दिखावे ! हम नहीं जान रहे हैं तभी भी बिछुड़ा नहीं है। हम नहीं मान रहे हैं तभी भी बिछुड़ा नहीं है। महाराज ! आप मरोगे नहीं, बिछुड़ोगे नहीं। तीसरी बात, बेवफा नहीं बनेगा। भगवान मरेगा नहीं, बिछुड़ेगा नहीं, बेवफा नहीं बनेगा जबकि शरीर व संसार मरेगा, बिछुड़ेगा और बेवफा बनेगा।

यह केवल लिख दो न अपनी दीवारों पर - 'भगवान मरेंगे नहीं, बिछुड़ेंगे नहीं और बेवफा नहीं होंगे। शरीर और संबंध मरेंगे, बिछुड़ेंगे और बेवफा होंगे।'

अक्षर मनुष्य सत्कर्म करता रहे और अपने को कर्ता न माने तो वह शीघ्र ही अपने अकर्ता पद में प्रतिष्ठित हो जायेगा।

उत्तरायण पर सम्पन्न हुआ सत्संग-सेवा-साधना अनुष्ठान शिविर

उत्तरायण पर्व पर अहमदाबाद आश्रम में हुए चार दिवसीय सत्संग-सेवा-साधना अनुष्ठान शिविर में देश के कोने-कोने से अध्यात्म के पिपासु गुरुद्वार पर पहुँचे। इस दौरान शिविरार्थियों को त्रिकाल संध्या-वंदन, पूज्य बापूजी के दुर्लभ विडियो सत्संगों के साथ आश्रम की साध्वी रेखा बहन व श्री सतीश भाई के प्रवचनों का भी लाभ मिला। भजन-कीर्तन आदि के साथ योगासन, ध्यान आदि का लाभ भी दिलाया गया। इस शिविर की खास बात यह रही कि साधकों ने पूज्य बापूजी के शीघ्र दर्शन-सत्संग पाने हेतु ॐकार मंत्र का जप-अनुष्ठान करते हुए शिविर पूरा किया।

मकर संक्रांति के पुण्यकाल में उदित होते भगवान भास्कर की 'आदित्यहृदय स्तोत्र' द्वारा स्तुति की गयी तथा सामूहिक रूप से अर्घ्य दिया गया। इस दिन हड्डियों तक के रोगों व पापों को दूर करनेवाले पंचगव्य तथा तिलयुक्त पुण्यमय भोजन-प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी।

१४ व १५ जनवरी को 'ऋषि प्रसाद' का वार्षिक सम्मेलन हुआ। इस कुप्रचार के दौर में भी कसौटियों को उन्नति की सीढ़ी बनाते हुए 'ऋषि प्रसाद' के नये सदस्य बनाने तथा घर-घर तक गुरु-ज्ञान पहुँचाने की सेवा में जो पुण्यात्मा लगे हुए हैं, वे धनभागी हैं ! सम्मेलन में कई पुण्यात्माओं ने अपने अनुभव बताये, जो उन्हें सेवा करने से हुए थे। साधकों ने इस अवसर पर सेवा में और दृढ़ता एवं गति से आगे बढ़ने का संकल्प भी लिया।

१६ जनवरी को महिला उत्थान मंडल द्वारा आयोजित 'चलें स्व की ओर...' कार्यक्रम का भी लाभ लोगों को मिला।

बाल संस्कार केन्द्र के सेवाधारियों व प्रभारियों की राष्ट्रीय बैठक में मातृ-पितृ पूजन दिवस, विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर व बाल संस्कार केन्द्रों के लिए प्रशिक्षण दिया गया और इन अभियानों के लिए बनी नयी प्रचार-सामग्री भी दी गयी। शिविर में सुप्रचार तथा सेवा आदि विषयों पर प्रेरणादायी लघु नाटिकाएँ भी प्रस्तुत की गयीं।

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२ मार्च : बुधवारी अष्टमी
(सूर्योदय से शाम ५-२१ तक)

५ मार्च : विजया एकादशी (इसका व्रत करनेवाले को इस ल
विजय की प्राप्ति होती है और परलोक अक्षय बना रहता है।)

७ मार्च : महाशिवरात्रि व्रत, रात्रि-जागरण, शिव-पू
(निशीथकाल : रात्रि १२-२५ से १-१४ तक), (प्रहर :- प्रथम
शाम ६-४५ से, द्वितीय : रात्रि ९-४७ से, तृतीय : मध्यरात्रि
१२-५० से, चतुर्थ : ८ मार्च प्रातः ३-५२ से) (महाशिवरात्रि
का व्रत, पूजन, जागरण और उपवास करनेवाले मनुष्य का
पुनर्जन्म नहीं होता। - स्कंद पुराण) (महाशिवरात्रि के समान प
और भय मिटानेवाला दूसरा व्रत नहीं है। इसको करनेमात्र से स
पापों का क्षय हो जाता है। - शिव पुराण)

८ मार्च : द्वापर युगादि तिथि (स्नान, दान, जप, हवन से अ

९ मार्च : खग्रास सूर्यग्रहण (भूभाग में ग्रहण-समय : प्रातः ४-४९ से सुबह १०-०४ तक) (भारत का पश्चिम भाग छोड़कर अन्य भागों में दिखेगा। जहाँ दिखेगा वहाँ नियम पालनीय हैं।)

१४ मार्च : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सुबह ११-१८ से शाम ५-४३ तक) (जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल ८६,००० गुना होता है। - पद्म पुराण)

१६ मार्च : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से सुबह १०-०६ तक)

१९ मार्च : आमलकी एकादशी (व्रत करके आँवले के वृक्ष के पास रात्रि-जागरण, उसकी १०८ या २८ परिक्रमा करनेवाला सब पापों से छूट जाता है और सहस्र गोदान का फल प्राप्त करता है।)
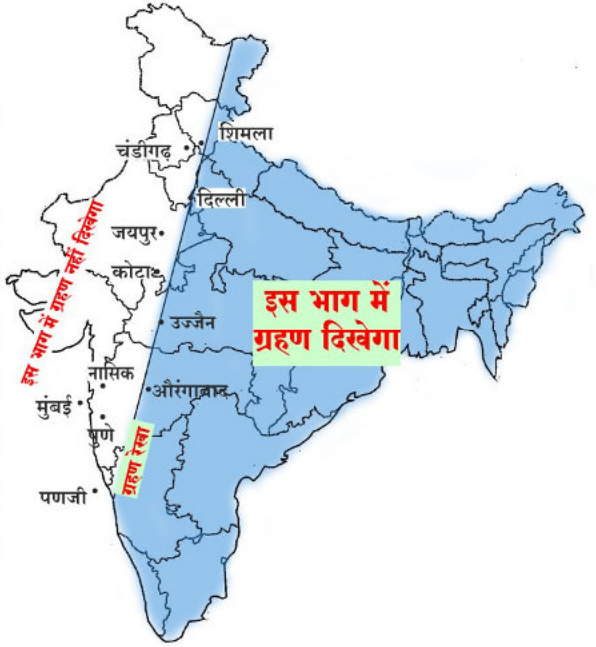
मान किसका स्थिर रहता है ? - पूज्य बापूजी

जो मान के योग्य कर्म तो करता है लेकिन मान की इच्छा नहीं रखता, उसका मान स्थिर हो जाता है। भगवान मान के योग्य कर्म करते हैं लेकिन भगवान में मान की इच्छा नहीं इसलिए भगवान का मान है। ऐसे ही समर्थ रामदासजी, एकनाथजी, तुकारामजी, साँईं लीलाशाहजी बापू, रमण महर्षिजी आदि का मान क्यों है ? क्योंकि वे मान के योग्य कर्म तो करते हैं परंतु उनमें मान की इच्छा नहीं होती। जो करें वह अंतर्यामी ईश्वर की प्रसन्नता पाने के लिए करें। मन से जो विचार करें वह ईश्वर के अनुकूल करें। बुद्धि से जो निर्णय करें वह ईश्वर की 'हाँ' में 'हाँ' करके निर्णय करिये। महाराज ! ईश्वर की 'हाँ' में 'हाँ' कैसे ? कोई बोलेगा कि 'मेरे को तो आया बुद्धि में तो ईश्वर ने प्रेरणा की।' तेरी वासना की प्रेरणा है कि ईश्वर की प्रेरणा है यह कैसे पता चले ? वासना की प्रेरणा ईश्वर की प्रेरणा का चोला पहनकर गड़बड़ करती है। 'मेरा कुछ है नहीं, मुझे अपने लिए नहीं चाहिए' तो यह समझो ईश्वर की प्रेरणा है। 'मुझे जो चाहिए वह सब मेरी चाह जल जाय और ईश्वर को जो चाहिए वह होता रहे' - ऐसी सोच हो तभी तो परम कल्याण होगा।

गरीबों-जरूरतमंदों में भोजन, अनाज, कम्बल आदि का वितरण

समाज में सुप्रचार, भगवन्नाम का आनंद-माधुर्य फैलाती संकीर्तन यात्राएँ

देश की रीढ़ को मजबूत बनाते 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम'

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
Posting at Dehradun G.P.O.
between 4th to 20th of every month.
Date of Publication: 1st Feb 2016

विभिन्न संतों ने किया बापूजी की निर्दोषता का समर्थन

जगद्गुरु श्री पंचानंद गिरिजी, जूना अखाड़ा

महामंडलेश्वर श्री नित्यानंदजी, महानिर्वाणी अखाड़ा

महामंडलेश्वर श्री देवेन्द्रानंदजी, महामंत्री, संत समिति

पू. जयंत आठवलेजी, संस्थापक, सनातन संस्था
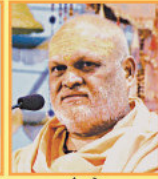
महामंडलेश्वर श्री विश्वेश्वरानंदजी, महानिर्वाणी अखाड़ा

अवधूत महामंडलेश्वर श्री स्वात्मबोधानंदजी, निरंजनी अखाड़ा

महामंडलेश्वर श्री केशवानंदजी, सनातन सेवा मंडल

महंत श्री रामगिरि बापू, महानिर्वाणी अखाड़ा

आचार्य श्री कौशिकजी महाराज, वृंदावन

श्री बोरिया बाबाजी, केनाराम परम्परा के महान वैष्णव संत

श्री श्री १००८ महामंडलेश्वर शांतिगिरिजी महाराज
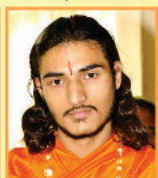
श्री कृपारामजी, गुरुकृपा आश्रम, जोधपुर

बाबा दाताशाहजी, अध्यक्ष, भगवान आश्रम सेवादल, पंजाब

बाबा हरपालसिंहजी, प्रमुख, रतवाड़ा साहिब गुरुद्वारा

श्री रामचैतन्यजी, महामंत्री, अ.भा. साधु समाज

भागवताचार्या साध्वी सरस्वतीजी

साध्वी कात्यायनी, 'कात्यायनी देवी संस्थान', मुंबई

श्री भास्करगिरिजी, वारकरी सम्प्रदाय, देवगढ़ संस्था

''लड़की के फोन रिकॉर्ड्स से पता लगा कि जिस समय पर वह कहती है कि वह कुटिया में थी, उस समय वह वहाँ थी ही नहीं ! बापूजी पर 'पॉक्सो एक्ट' लगवाने हेतु एक झूठा सर्टिफिकेट निकाल के दिखा दिया गया कि वह १८ साल से कम उम्र की है। यह केस तो तुरंत रद्द होना चाहिए।''

– सुप्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

पाँच प्रधानमंत्रियों, कई मुख्यमंत्रियों और राष्ट्रपतियों ने जिनके सत्संग व दैवी कार्यों की प्रशंसा की है, ऐसे ७८ वर्षीय निर्दोष संत की लड़खड़ाती तबीयत के बावजूद उनके साथ इतना अन्याय कब तक ?

''पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं। बापूजी का प्रवचन सुनकर बड़ा बल मिला है।''

– भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार

''पूज्य बापूजी के मानव-कल्याण के तपश्चर्या-यज्ञ में से जो संस्कार की दिव्य ज्योति प्रकट हुई है, उसके प्रकाश में मैं और जनता - सब चलते रहें।''

– श्री नरेन्द्र मोदी, वर्तमान प्रधानमंत्री, भारत सरकार
तत्कालीन मुख्यमंत्री, गुजरात

''कलह, विग्रह और द्वेष से ग्रस्त वर्तमान वातावरण में बापू जिस तरह सत्य, करुणा और संवेदनशीलता के संदेश का प्रसार कर रहे हैं, उसके लिए राष्ट्र उनका ऋणी है।''

– श्री चन्द्रशेखर, तत्कालीन प्रधानमंत्री, भारत सरकार

श्री एच.डी. देवेगौड़ा
तत्कालीन प्रधानमंत्री, भारत सरकार

''पूज्य बापूजी के दिव्य दर्शन व अनुभवसम्पन्न वाणी का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा है।''

– श्री गुलजारीलाल नंदा, तत्कालीन प्रधानमंत्री, भारत सरकार
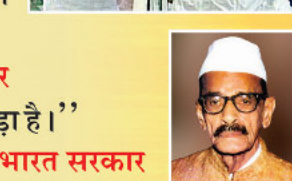
श्री राजनाथ सिंह
केन्द्रीय गृहमंत्री

सुश्री उमा भारती
केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री

श्री नितिन गडकरी
केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री

श्री मोहन भागवत
सरसंघचालक, रा.स्व. संघ

श्री कैलाश विजयवर्गीय
राष्ट्रीय महासचिव, भाजपा

श्रीमती आनंदी बहन पटेल
मुख्यमंत्री, तत्कालीन शिक्षामंत्री, गुज.
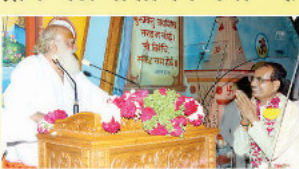
श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

डॉ. रमन सिंह
मुख्यमंत्री, छ.ग.

श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया
मुख्यमंत्री, राजस्थान

प्रकाश सिंह बादल
मुख्यमंत्री, पंजाब